अपठित गद्यांश

.अपठित गद्यांश का अर्थ

गद्य का ऐसा अंश जिसका पहले अध्ययन नहीं किया गया हो, वह अपठित गद्यांश कहलाता है। प्राय: अपठित गद्यांश का उद्देश्य किसी विषय को समझना, भाषा और शैली के बीच के संबंधों को खोजना तथा विद्यार्थियों की अवबोध क्षमता को परखना होता है।

अपठित गद्यांश के अंतर्गत विद्यार्थियों को भावार्थ (मूल भाव) को समझकर उसका सावधानीपूर्वक, गंभीरता व गहनता से अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। परीक्षा में 5-5 अंक के दो अपठित गद्यांश दिए जाएँगे, जिनमें से किसी एक गद्यांश पर आधारित 1-1 अंक के 5 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

अपठित गद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके

अपठित गद्यांश को हल करने के चरणबद्ध तरीके निम्नलिखित हैं

① सर्वप्रथम दिए गए अपठित गद्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके मूल भाव को आत्मसात् (समझना) करना चाहिए।

② गद्यांश में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को रेखांकित करते रहना चाहिए। इससे विषय-वस्तु व पठन कौशल वाले प्रश्नों को हल करने में आसानी होती है।

③ भाषिक संरचना एवं व्याकरण संबंधी प्रश्नों के लिए गद्यांश में दिए गए कठिन शब्दों, मुहावरों आदि को रेखांकित करना चाहिए।

④ शीर्षक संबंधी प्रश्न पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा पूरे गद्यांश को पढ़ने व समझने के पश्चात् ही उचित शीर्षक का चयन करना चाहिए।

⑤ अंत में एक बार सभी प्रश्नों के उत्तरों को पुन: ध्यानपूर्वक पढ़कर जाँच लेना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश 1

मानव सभ्यता पर औद्योगिक क्रांति की धमक अभी थमी भी नहीं कि एक नई तकनीकी क्रांति ने अपने आने की घोषणा कर दी है। 'नैनो-तकनीक' के समर्थक दावा करते हैं कि जब यह अपने पूरे वजूद से आएगी तो धरती का नामोनिशान मिट जाएगा और नैनो रोबोट की स्वनिर्मित फौज पूरी तरह क्षत-विक्षत शव को पलक झपकते ही चुस्त-दुरुस्त इंसान में तबदील कर देगी।

दूसरी ओर नैनो-तकनीक की असीमित शक्ति से आशंकित इसके विरोधी इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज्यादा अभिशप्त समझते हैं। इन दोनों अतिवादी धारणाओं के बीच इतना अवश्य कहा जा सकता है कि हम तकनीकी क्रांति के एक सर्वथा नए मुहाने पर आ पहुँचे हैं, जिसके बाद उद्योग, चिकित्सा, दूरसंचार, परिवहन सहित हमारे जीवन में शामिल तमाम तकनीकी जटिलताएँ अपने पुराने अर्थ खो देंगी। इस अभूतपूर्व तकनीकी बदलाव के सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थ क्या होंगे, यह देखना सचमुच दिलचस्प होगा।

आदमी ने कभी सभ्यता की बुनियाद पत्थर के बेडौल हथियारों से डाली थी, अनगढ़ शिलाओं को छीलकर उन्हें कुल्हाड़ों और भालों की शक्ल में ढाला और इस उपलब्धि ने उत्पादकता की दृष्टि से उसे दूसरे जंतुओं की तुलना में लाभ की स्थिति में ला खड़ा किया। औज़ारों को बेहतर बनाने का यह सिलसिला आगे कई विस्मयकारी मसलों से गुज़रा और औद्योगिक क्रांति ने तो मनुष्य को मानो प्रकृति के नियंत्रक की भूमिका सौंप दी।

तकनीकी कौशल की हतप्रभ कर देने वाली इस यात्रा में एक बात ऐसी है, जो पाषाण युग के बेढब हथियारों से चमत्कारी माइक्रोचिप निर्माण तक एक जैसी बनी रही। हम अपने औजार, कच्चे माल को तराशकर बनाते हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि सारे पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बने हैं, लेकिन पदार्थों के गुण इस बात पर निर्भर करते हैं कि उनमें परमाणुओं को किस तरह सजाया गया है। कार्बन के परमाणुओं की एक खास बनावट से कोयला तैयार होता है, तो दूसरी खास बनावट उन्हें हीरे का रूप दे देती है। परमाणु और अणुओं को इकाई मानकर मनचाहा उत्पाद तैयार करना ही 'नैनो-तकनीक' का सार है।

(CBSE 2020)

I. नैनो तकनीक के वजूद में आने का क्या परिणाम होगा?

(क) बेरोजगारी को बढ़ावा मिलेगा
(ख) देश में समृद्धि आएगी
(ग) धरती का नामो-निशान मिट जाएगा
(घ) सुविधाओं में वृद्धि होगी

II. नैनो तकनीक के विरोधी द्वारा इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज्यादा अभिशप्त क्यों माना गया?

(क) यह तकनीक संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है
(ख) यह तकनीक विकास के नए प्रतिमान स्थापित करेगी
(ग) यह तकनीक कौशल को बढ़ाने के बजाय घटा देगी
(घ) यह तकनीक नए युग में चार चाँद लगा देगी

III. मानव प्रकृति का नियंत्रक किस आधार पर बन गया?

(क) औजारों के निर्माण करके
(ख) औद्योगिक क्रांति करके
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) प्रकृति को प्रोत्साहित करके

IV. गद्यांश के अनुसार 'नैनो-तकनीक' क्या है?

(क) छोटी-छोटी मशीनों का प्रयोग करके बड़ी चीज बनाना
(ख) परमाणु और अणुओं को मूलभूत इकाई मानकर इच्छानुसार उत्पाद तैयार करना
(ग) परमाणु और अणुओं में भेद न करते हुए इनका प्रयोग उत्पाद बनाने में करना
(घ) तकनीक के क्षेत्र में मनुष्य को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान करना

V. गद्यांश के अनुसार नैनो तकनीक के महत्त्व के बारे में कौन-सा कथन सही है?

(क) यह ऐसी तकनीक है, जो मनुष्य की सोच की सीमा बढ़ा देगी
(ख) यह मनुष्य के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है
(ग) यह मनुष्य को केवल विनाश की ओर ले जाएगी
(घ) यह ऐसी तकनीक है, जो मनुष्य की सोच को सीमित कर देगी

गद्यांश 2

अपनी सभ्यता का जब मैं अवलोकन करता हूँ, तब लोगों को काम के संबंध की उनकी विचारधारा के अनुसार उन्हें विभाजित करने लगता हूँ। एक वर्ग में वे लोग आते हैं, जो काम को उस घृणित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, जिसकी उनके लिए उपयोगिता केवल धन अर्जित करना है। वे अनुभव करते हैं कि जब दिनभर का श्रम समाप्त हो जाता है, तब वे जीना सचमुच शुरू करते हैं और अपने आप में होते हैं।

जब वे काम में लगे होते हैं, तब उनका मन भटकता रहता है। काम को वे उतना महत्त्व देने का कभी विचार नहीं करते,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

क्योंकि केवल आमदनी के लिए ही उन्हें काम की आवश्यकता है। दूसरे वर्ग के लोग अपने काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के एक सुयोग के रूप में देखते हैं। वे धन इसलिए कमाना चाहते हैं, ताकि अपने काम से अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। जिस काम में वे संलग्न होते हैं, उसकी पूजा करते हैं।

पहले वर्ग में केवल वे लोग ही नहीं आते हैं, जो बहुत कठिन और अरुचिकर काम करते हैं। उसमें बहुत-से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं, जो वास्तव में कोई काम नहीं करते हैं। ये सभी धन को ऐसा कुछ समझते हैं, जो उन्हें काम करने के अभिशाप से बचाता है। इसके सिवाय कि उनका भाग्य अच्छा रहा है, वे अन्यथा उन कारखानों के मजदूरों की तरह ही हैं, जो अपने दैनिक काम को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझते हैं। उनके लिए काम कोई घृणित वस्तु है और धन वांछनीय, क्योंकि काम से छुटकारा पाने के साधन का प्रतिनिधित्व यही धन करता है।

यदि काम को वे टाल सकें और फिर भी धन प्राप्त हो जाए, तो खुशी से यही करेंगे। जो लोग काम में अनुरक्त हैं तथा उसके प्रति समर्पित हैं, ऐसे कलाकार, विद्वान् और वैज्ञानिक दूसरे वर्ग में सम्मिलित हैं। वस्तुओं को बनाने और खोजने में वे हमेशा दिलचस्पी रखते हैं। इसके अंतर्गत परंपरागत कारीगर भी आते हैं, जो किसी वस्तु को रूप देने में गर्व और आनंद का वास्तविक अनुभव करते हैं। अपनी मशीनों को ममत्वभरी सावधानी से चलाने और उनका रख-रखाव करने वाले कुशल मिस्त्री और इंजीनियर इसी वर्ग से संबंधित हैं। *(CBSE 2020)*

I. पहले वर्ग के लोग काम को किस रूप में देखते हैं?
(क) कर्त्तव्य भावना के रूप में
(ख) धन प्राप्ति के साधन के रूप में
(ग) आनंद प्राप्ति के साधन के रूप में
(घ) समाज सेवा के रूप में

II. दूसरे वर्ग के लोग धन क्यों कमाना चाहते हैं?
(क) क्योंकि यही उनका एकमात्र उद्देश्य होता है
(ख) क्योंकि धन से ही इच्छाओं की पूर्ति होती है
(ग) क्योंकि वे अपने काम से अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें
(घ) क्योंकि वे दिनभर की थकान मिटा सकें

III. काम करना किनके लिए घृणित है?
(क) जो काम की तुलना में धन को प्राथमिकता देते हैं
(ख) जो धन की तुलना में काम को प्राथमिकता देते हैं
(ग) जो दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं
(घ) जो धन और काम को समान नहीं मानते हैं

IV. दूसरे वर्ग के लोगों के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?
(क) वे काम में अनुरक्त रहते हैं
(ख) वे काम के प्रति समर्पित होते हैं
(ग) वे वस्तुओं को रूप देने में आनंद का अनुभव करते हैं
(घ) वे काम से छुटकारा पाना चाहते हैं

V. प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार काम के प्रति समर्पित लोगों में शामिल है
(क) कलाकार (ख) विद्वान
(ग) वैज्ञानिक (घ) ये सभी

गद्यांश 3

हर मनुष्य या समाज या राज्य के लिए कुछ गहराई का होना और कहीं-न-कहीं उसकी जड़ें होना आवश्यक है। जब तक उनकी जड़ अतीत में न हो तब तक उनकी कोई गिनती नहीं होती और अतीत आखिर पीढ़ियों के अनुभव और कई प्रकार की समझ-बूझ का संचय है। आपके पास इसका होना जरूरी है वरना आप किसी दूसरी चीज की एक घटिया नकल मात्र रह जाएँगे और एक व्यक्ति या समूह के नाते आपको उसका कोई लाभ नहीं होगा। दूसरी ओर यह भी है कि कोई केवल जड़ों तक ही सीमित नहीं रह सकता। जड़ों में भी अंकुर फूटकर जब तक ऊपर धूप और खुली हवा में नहीं आते, तो जड़ें भी संकट में पड़ जाती हैं।

सुसंस्कृत मन की जड़ भले ही अपने अंदर ही हो, लेकिन उसे अपने दरवाजे और खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए। उसमें दूसरे की दृष्टि को पूरी तरह समझने की क्षमता अवश्य होनी चाहिए, भले ही वह उससे हमेशा सहमत न हो। सहमति और असहमति का सवाल तभी उठता है, जब आप किसी चीज को समझते हैं, अन्यथा यह आँख बंद करके स्वीकार करना है, जिसे किसी भी चीज के बारे में सुसंस्कृत दृष्टि नहीं कहा जा सकता। *(CBSE 2020)*

I. हमारी जड़ों का अतीत से जुड़ा होना क्यों आवश्यक है?
(क) क्योंकि इससे मनुष्य की पहचान होती है
(ख) क्योंकि इससे समाज की पहचान होती है
(ग) क्योंकि इससे राज्य की पहचान होती है
(घ) उपरोक्त सभी

II. लेखक के अनुसार अतीत के अंतर्गत क्या शामिल है?
(क) अपनी पुरानी पीढ़ी के अनुभव
(ख) जर्जर होती मान्यताएँ
(ग) प्रगति के प्रतिमान
(घ) असहमति के तथ्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

III. गद्यांश के अनुसार सुसंस्कृत दृष्टि के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?

(क) सुसंस्कृत दृष्टि अतीत से जुड़ी रहती है
(ख) सुसंस्कृत दृष्टि नई दृष्टि को समझती है
(ग) सुसंस्कृत दृष्टि समाज की पहचान के लिए अत्यंत आवश्यक है
(घ) सुसंस्कृत दृष्टि अतीत से दूर रहती है

IV. सहमति और असहमति का प्रश्न कब उठता है?

(क) जब व्यक्ति अवचेतन अवस्था में होता है
(ख) जब व्यक्ति किसी चीज को समझता है
(ग) जब व्यक्ति केवल विरोध करता है
(घ) जब व्यक्ति में आत्मविश्वास कम होता है

V. सुसंस्कृत दृष्टि को आवश्यक क्यों माना गया है?

(क) क्योंकि यह मनुष्य या समाज की पहचान के लिए आवश्यक है
(ख) क्योंकि यह जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण नहीं रखती है
(ग) क्योंकि यह केवल स्वार्थों पर आधारित होती है
(घ) क्योंकि यह समाज की उपेक्षा करती है

गद्यांश 4

वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है। यदि भारतवर्ष पर नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने, व्यवसाय हिसाब-किताब तथा रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं। आज भी कंप्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है तथा आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है। प्रश्न उठता है कि कंप्यूटर आज की ज़रूरत है? इसका उत्तर है—कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है, किंतु इसके बिना आज की दुनिया अधूरी जान पड़ती है। सांसारिक गतिविधियों, परिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है।

पहले मनुष्य जीवन-भर में यदि सौ लोगों के संपर्क में आता था, तो आज वह दो-हज़ार लोगों के संपर्क में आता है। पहले वह दिन में पाँच-दस लोगों से मिलता था, तो आज पचास-सौ लोगों से मिलता है। पहले वह दिन में काम करता था, तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं। आज व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं, व्यापार बढ़ रहे हैं, गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं तथा साधन बढ़ रहे हैं। इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ़ लिया है।

कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर रामबाण औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की लंबी-लंबी गणनाएँ, कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कंप्यूटर की सहायता से काफी सुविधा हो गई है।

(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)

I. वर्तमान युग कंप्यूटर का युग क्यों है?

(क) क्योंकि कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है
(ख) क्योंकि कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है
(ग) क्योंकि कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गई है
(घ) क्योंकि कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है

II. गद्यांश के अनुसार, कंप्यूटर के महत्त्व के विषय में कौन-सा विकल्प सही है?

(क) कंप्यूटर काम के तनाव को समाप्त करने का उपाय है
(ख) कंप्यूटर कई मानवीय भूलों को निर्णायक रूप से सुधार देता है
(ग) कंप्यूटर के आने से सारी हड़बड़ाहट दूर हो गई है
(घ) मानव की सारी समस्याओं का हल कंप्यूटर द्वारा ही संभव है

III. गद्यांश के अनुसार, किस आवश्यकता ने कंप्यूटर में अपना निदान ढूँढ़ लिया है?

(क) अनियंत्रित कर्मचारियों को अनुशासित करने की
(ख) अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की
(ग) अधिक-से-अधिक लोगों से जुड़ जन-जागरण लाने की
(घ) अधिक-से-अधिक कार्य कभी भी व कहीं भी करने की

IV. कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था?

(क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं
(ख) गलतियाँ होने के डर से कर्मचारी घबराए हुए रहते थे
(ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था
(घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है, क्योंकि

(क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं
(ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है
(ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं
(घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है

गद्यांश 5

पाठक आमतौर पर रूढ़िवादी होते हैं, वे सामान्यत: साहित्य में अपनी मर्यादाओं की स्वीकृति या एक स्वप्न-जगत में पलायन चाहते हैं। साहित्य एक झटके में उन्हें अपने आस-पास के उस जीवन के प्रति सचेत करता है, जिससे उन्होंने आँखें मूँद रखी थीं। शुतुरमुर्ग़ अफ्रीका के रेगिस्तानों में नहीं मिलते, वे हर जगह बहुतायत में उपलब्ध हैं। प्रौद्योगिकी के इस दौर का नतीजा जीवन के हर गोशे में नक़द फ़सल के लिए बढ़ता हुआ पागलपन है और हमारे राजनीतिज्ञ, सत्ता के दलाल, व्यापारी, नौकरशाह-सभी लोगों को इस भगदड़ में नहीं पहुँचने, जैसा दूसरे करते हैं वैसा करने, चूहादौड़ में शामिल होने और कुछ-न-कुछ हासिल कर लेने को जिए जा रहे हैं।

हम थककर साँस लेना और अपने चारों ओर निहारना, हवा के पेड़ में से गुज़रते वक़्त पत्तियों की मनहर लय-गतियों को और फूलों के जादुई रंगों को, फूली सरसों के चमकदार पीलेपन को, लिखे मैदानों की घनी हरीतिमा को मर्मर ध्वनि के सौंदर्य, हिमाच्छादित शिखरों की भव्यता, समुद्र तट पर पछाड़ खाकर बिखरती हुई लहरों के घोष को देखना-सुनना भूल गए हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि पश्चिम का आधुनिकतावाद और भारत तथा अधिकांश तीसरी दुनिया के नव-औपनिवेशिक चिंतन के साथ अपनी जड़ों से अलगाव, व्यक्तिवादी अजनबियत में हमारा अनिवार्य बे-लगाम धँसाव, अचेतन के बिंब, बौद्धिकता से विद्रोह, यह घोषणा कि दिमाग अपनी रस्सी के अंतिम सिरे पर है, यथार्थवाद का विध्वंस, काम का ऐन्द्रिक सुख मात्र रह जाना और मानवीय भावनाओं का व्यावसायीकरण तथा निम्नस्तरीय-करण इस अंधी घाटी में आ फँसने की वहज है। लेकिन वे भूल जाते हैं कि आधुनिकीकरण इतिहास की एक सच्चाई है, जो नई समस्याओं को जन्म देने और विज्ञान को अधिक जटिल बनाने के बावजूद, एक तरह से, मानव जाति की नियति है।

मेरा सुझाव है कि विवेकहीन आधुनिकता के बावजूद आधुनिकता की दिशा में धैर्यपूर्वक सुयोजित प्रयास होने चाहिए। एक आलोचक किसी नाली में भी झाँक सकता है, पर वह नाली-निरीक्षक नहीं होता। लेखक का कार्य दुनिया को बदलना नहीं, समझना है, साहित्य क्रांति नहीं करता; वह मनुष्यों का दिमाग बदलता है और उन्हें क्रांति की आवश्यकता के प्रति जागरूक बनाता है। *(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)*

I. गद्यांश में 'शुतुरमुर्ग़' की संज्ञा किसे दी गई है?

(क) लेखक, जो संसार को समझना चाहता है
(ख) राजनीतिज्ञ, जो अपनी स्वार्थ साधना चाहता है
(ग) पाठक, जो सपनों की दुनिया में रहना चाहता है
(घ) नौकरशाह, जो दूसरों जैसा बनने की होड़ में शामिल है

II. आधुनिकता की दिशा में सुयोजित प्रयास क्यों होने चाहिए?

(क) इससे जीवन सुगम हो जाएगा तथा मानव प्रकृति का आनंद ले सकेगा
(ख) इससे नई समस्याओं को जन्म लेने से पहले ही रोका जा सकेगा
(ग) आधुनिक होने की प्रक्रिया सदा से मानव सभ्यता का अंग रही है
(घ) इससे विज्ञान सरल हो अधिक मानव कल्याणी हो सकेगा

III. 'नक़द फ़सल के लिए बढ़ता हुआ पागलपन' से क्या तात्पर्य है?

(क) लोग तुरंत व अधिक-से-अधिक लाभ कमाना चाहते हैं
(ख) लोग प्रकृति को समय नहीं देना चाहते हैं
(ग) लोग थके हुए हैं पर विश्राम नहीं करना चाहते
(घ) लोग भौतिकवादी तथा अमीर लोगों की नकल करना चाहते हैं

IV. पाठक साहित्य से आमतौर पर क्या अपेक्षा रखते हैं?

(क) साहित्य को हमारे मन की बात कहनी चाहिए
(ख) साहित्य को संसार को यथावत समझना चाहिए
(ग) साहित्य तनाव कम करने वाला होना चाहिए
(घ) साहित्य को जीवन कौशलों व मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए

V. लेखक के अनुसार साहित्य क्या कार्य करने के लिए प्रेरित करता है?

(क) लोगों को यथार्थ से अवगत करा बदलाव लाने के लिए
(ख) लोगों को जीवन की समस्याओं को भुला आगे बढ़ते जाने के लिए
(ग) लोगों को यथार्थवाद का विध्वंस करने के लिए
(घ) लोगों को भावनाओं व ऐन्द्रिक सुख से ऊपर उठ कार्य करने के लिए

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश 6

पशु को बाँधकर रखना पड़ता है, क्योंकि वह निरंकुश है। चाहे जहाँ-तहाँ चला जाता है, इधर-उधर मुँह मार देता है। क्या मनुष्य को भी इसी प्रकार दूसरों का बंधन स्वीकार करना चाहिए? क्या इससे उसमें मनुष्यत्व रह पाएगा। पशु के गले की रस्सी को एक हाथ में पकड़कर और दूसरे हाथ में एक लकड़ी लेकर जहाँ चाहो हाँककर ले जाओ। जिन लोगों को इसी प्रकार हाँके जाने का स्वभाव पड़ गया है, जिन्हें कोई भी जिधर चाहे ले जा सकता है, काम में लगा सकता है, उन्हें भी पशु ही कहा जाएगा। पशु को चाहे कितना मारो, चाहे कितना उसका अपमान करो, बाद में खाने को दे दो, वह पूँछ और कान हिलाने लगेगा। ऐसे नर पशु भी बहुत से मिलेंगे जो कुचले जाने और अपमानित होने पर भी जरा-सी वस्तु मिलने पर चट संतुष्ट और प्रसन्न हो जाते हैं।

कुत्ते को कितना ही ताड़ना देने के बाद उसके सामने एक टुकड़ा डाल दो, वह झट से मारपीट को भूलकर उसे खाने लगेगा। यदि हम भी ऐसे ही हैं तो हम कौन हैं, इसे स्पष्ट कहने की आवश्यकता नहीं। पशुओं में भी कई पशु मारपीट और अपमान को नहीं सहते। वे कई दिन तक निराहार रहते हैं, कई पशुओं ने तो प्राण त्याग दिए, ऐसा सुना जाता है। पर इस प्रकार के पशु मनुष्य-कोटि के हैं, उनमें मनुष्यत्व का समावेश है, यदि ऐसा कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी।

(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)

I. कई पशुओं ने प्राण त्याग दिए, क्योंकि

(क) उन्हें विद्रोह करने की अपेक्षा प्राण त्यागना उचित लगा
(ख) उन्हें तिरस्कृत होकर जीवन जीना उचित नहीं लगा
(ग) वह यह शिक्षा देना चाहते थे कि प्यार, मारपीट से अधिक कारगर है
(घ) वह यह दिखाना चाहते थे कि लोगों को उनकी आवश्यकता अधिक है न कि उन्हें लोगों की

II. बंधन स्वीकार करने से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

(क) मनुष्य सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से कम स्वतंत्र हो जाएगा
(ख) मनुष्यत्व में व्यक्तिगत इच्छा व निर्णय का तत्त्व समाप्त हो जाएगा
(ग) मनुष्य बँधे हुए पशु के समान हो जाएगा
(घ) मनुष्य की निरंकुशता में परिवर्तन हो जाएगा

III. मनुष्यत्व को परिभाषित करने हेतु कौन-सा मूल्य अधिक महत्त्वपूर्ण है?

(क) स्वतंत्रता (ख) न्याय
(ग) शांति (घ) प्रेम

IV. गद्यांश के अनुसार, कौन-सी उद्घोषणा की जा सकती है?

(क) सभी पशुओं में मनुष्यत्व है
(ख) सभी मनुष्यों में पशुत्व है
(ग) मानव के लिए बंधन आवश्यक नहीं है
(घ) मान-अपमान की भावना केवल मानव ही समझता है

V. गद्यांश में नर और पशु की तुलना किन बातों को लेकर की गई है?

(क) पिटने की क्षमता
(ख) पूँछ-कान आदि का हिलना
(ग) बंधन स्वीकार करना
(घ) लकड़ी द्वारा हाँके जाना

गद्यांश 7

व्यक्ति चित्त प्रत्येक समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतने ही बड़े पैमाने पर लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए, लक्ष्य की बात भूल गए, आदर्शों को मज़ाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, परंतु कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो धर्मभीरू हैं, वे भी त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-बाहर भारतवर्ष आज भी यही अनुभव कर रहा है कि धर्म, कानून से बड़ी चीज़ है। आज भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है।

(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)

I. मनुष्य ने आदर्शों को मज़ाक का विषय किस कारण बना दिया?

(क) कानून के कारण
(ख) उन्नति के कारण
(ग) लोभ के कारण
(घ) धर्मभीरुता के कारण

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. धर्म एवं कानून के संदर्भ में भारत के विषय में कौन-सा कथन सबसे अधिक सही है?

(क) महिलाओं का सम्मान करना धर्म तो है, पर कानून नहीं है

(ख) धर्म और कानून दोनों को धोखा दिया जा सकता है

(ग) भले लोगों के लिए कानून नहीं चाहिए और बुरे लोग इसकी परवाह नहीं करते हैं

(घ) भारत का निचला वर्ग कदाचित अभी भी कानून को धर्म के रूप में देखता है

III. भारतवर्ष में सेवा और सच्चाई के मूल्य .... । (रेखांकित के लिए विकल्प छाँटिए।)

(क) मनुष्य की समाज पर निर्भरता में कमी होने के कारण ह्रासित हुए हैं

(ख) जीवन में उन्नति के बड़े पैमाने के कारण कहीं छिप से गए हैं

(ग) न्यायालयों में कानून की सत्याभासी धाराओं में उलझ कर रह गए हैं

(घ) परमार्थ के लिए जीवन की बाज़ी लगाने वाले व्यक्ति के मन को अभी भी नियंत्रित कर रहे हैं

IV. भारतवर्ष का बड़ा वर्ग बाहर-भीतर कदाचित क्या अनुभव कर रहा है?

(क) धर्म, कानून से बड़ी चीज़ है

(ख) कानून, धर्म से बड़ी चीज़ है

(ग) संयम अशक्त और अकर्मण्य लोगों के लिए है

(घ) आदर्श और उसूलों से यथार्थ जीवन असंभव है

V. निम्नलिखित में से सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक का चयन कीजिए।

(क) उन्नति के संदर्भ में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता

(ख) मानव चित्त के आकर्षण निवारण में आदर्शों की भूमिका

(ग) समाज कल्याण हेतु धर्म और कानून का सहअस्तित्व

(घ) धार्मिक व सार्वभौमिक मूल्यों का एकीकरण

गद्यांश 8

कहा जाता है कि कोई भी चीज, बाँटने से बढ़ती है। उसी प्रकार खुशियों को बाँटना भी, खुशी पाने का ही एक सोपान है। जैसे ज्ञान देने से कभी नहीं घटता, वैसे ही खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं। दूसरों को खुशी देना भी, अपने खुशी के खजाने को बढ़ाने जैसा है, दूसरों को खुशियाँ कई प्रकार से दी जा सकती हैं—उनकी भावनाओं का आदर कर, सहानुभूति रखकर, मदद करके या फिर उनके सुख-दु:ख में सहभागी बनकर। किसी बूढ़े व्यक्ति को सड़क पार कराना, बीमारी में सेवा करना, अपनी वस्तुओं को बाँटना, दूसरों के सुख-दु:ख में साथ देना आदि खुशी पाने के उदाहरण हैं। पर यह सच है कि खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं।

खुशी पाने के लिए जरूरी है सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाना। सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ है-हर दु:ख, कष्ट, परेशानी में भी कोई अच्छाई ढूँढ़ सकने की क्षमता। यदि हम होने वाली हर घटन का सकारात्मक पक्ष देखने की आदत डाल लें तो हर हाल में खुश रहने का मूलमंत्र हमारी मुट्ठी में आ जाएगा। यह खुशी पाने की पहली सीढ़ी या सोपान है। उदाहरण के लिए, दौड़ में पिछड़ जाने का सकारात्मक पक्ष यह है कि हम और अधिक अभ्यास कर अपनी गति को बढ़ाएँ और यह सोचकर निराश न हों कि हम दौड़ में पिछड़ गए बल्कि हम या सोचें कि कोई हममें भी होगी जिससे हम आगे निकल सकते हैं।

I. खुशी के खजाने को बढ़ाने जैसा किसे माना गया है?

(क) दूसरों की कमियों में सुधार करना

(ख) दूसरों को खुशी देना

(ग) दूसरों को कटुवाणी द्वारा समझना

(घ) दूसरों की ओर ध्यान न देना

II. सकारात्मक दृष्टिकोण का क्या अर्थ है?

(क) दु:ख में भी खुशी को तलाशना

(ख) केवल स्वयं के प्रति सोचना

(ग) जीवन का नियम

(घ) मायूस होना

III. खुशी पाने का प्रथम सोपान क्या है?

(क) परेशानियों का सकारात्मक पक्ष देखना

(ख) परेशानियों को देख भागना

(ग) समय पर छोड़ देना

(घ) भाग्य को कोसना

IV. दौड़ में पिछड़ जाने का सकारात्मक पक्ष क्या है?

(क) हार नहीं मानना

(ख) अपनी कमजोरियों को समझना

(ग) पुनः अभ्यास करना

(घ) उपरोक्त सभी

V. गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए

(क) जीवन वृत्तांत

(ख) जीवन का रहस्य

(ग) जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

(घ) जीवन की पहेली

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश 9

जो लोग अपनी असफलताओं के लिए या जीवन में गतिरोध के लिए हालातों को जिम्मेदार ठहराते हैं, वे लोग या तो लगत हैं या हालात से डरते हैं। वे या तो जीवन को समझ नहीं पाए या उलझनों में फँसे हुए हैं। वे या तो आलसी हैं या अकर्मण्य हैं। एक कारण और भी हो सकता है कि उनकी नीयत और नीति में मेल न हो। यह अति आवश्यक है कि नीयत और नीति दोनों एक सूत्र में पिरोई हुई हों अर्थात् मेल खाती हों। ऐसा कदापि संभव नहीं है और नीयत मानसिक इच्छा है, जो खोटी भी हो सकती है और खरी भी। खोटी नीयत वाला व्यक्ति कदापि इस संसार में नहीं टिक सकता और यदि टिकेगा, तो बहुत कम समय के लिए, केवल तब तक, जब तक उसकी नीयत खुलकर सामने नहीं आती, क्योंकि नीति की जननी नीयत है और जब जननी में ही दोष है, तो संतान में कोई-न-कोई विकृति अवश्य आ जाएगी।

हालातों को असफलता के लिए जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं लगता, क्योंकि हालात तो उनके साथ भी वही होते हैं या लगभग वही होते हैं, जो सफलता प्राप्त करते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी असफलताओं की जिम्मेदारी खुद नहीं ले सकता, तो वह अपनी सफलता की जिम्मेदारी लेने के काबिल नहीं है। जीवन का असली आनंद तो तभी है, जब परिस्थितियाँ विषम हों।

I. किस तरह के लोगों की नीतय और नीति में मेल नहीं रहता है?

(क) अकर्मण्य व आलसी लोग
(ख) हालात को जिम्मेदार ठहराने वाले लोग
(ग) जीवन को न समझने वाले लोग
(घ) उपरोक्त सभी

II. खोटी नीयत वाला व्यक्ति इस संसार में क्यों नहीं टिक पाता?

(क) अवगुणों के कारण
(ख) समय अभाव के कारण
(ग) गलत नीयत या नीति के कारण
(घ) अदारता के कारण

III. असफलता के लिए किसे जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं माना गया है?

(क) ईश्वर को (ख) प्रकृति को
(ग) हालातों को (घ) काबिल व्यक्ति को

IV. लेखक ने नीति की जननी किसे कहा है?

(क) व्यवहार को (ख) नीयत को
(ग) समय को (घ) सोच को

V. जीवन का असली आनंद कब मिलता है?

(क) उत्सवों में (ख) मित्रों के साथ
(ग) खुशियों में (घ) विषम परिस्थितियों में

गद्यांश 10

एक ज़माना था जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी। सब मिल-जुलकर रहते थे। हारी-बीमारी, खुशी-गम सब में लोग एक-दूसरे के साथ थे। किसी का किसी से कुछ छिपा नहीं था। आज के लोगों को शायद लगे कि लोगों की अपनी 'प्राइवेसी' क्या रही होगी, लेकिन इस 'प्राइवेसी' के नाम पर ही तो हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए।

पहले अलग चूल्हे-चौके हुए, फिर अलग मकान लेकर लोग रहने लगे, निजी स्वतंत्रता की अपनी नई परिभाषा देकर यह एकाकीपन हमने स्वयं अपनाया है। मुहल्ले में आपस में चाहे कितनी चखचख हो, यह थोड़े ही संभव था कि बाहर का कोई आकर किसी को कड़वी बात कह जाए! पूरा मोहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था। देखते-देखते ज़माना हवा हो गया। मुहल्लेदारी टूटने लगी, आबादी बढ़ी, महँगाई बढ़ी, पर सबसे ज़्यादा जो चीज़ दुर्लभ हो गई वह था आपसी लगाव, अपनापन। लोगों की आँखों का शील मर गया।

देखते-देखते कैसा रंग बदला है! लोग अपने-आप में सिमट कर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं। सारे नाते-रिश्तों को उन्होंने ताक पर रख दिया है, तब फिर पड़ोसी से उन्हें क्या लेना-देना है। यह नीरस महानगरीय सभ्यता महानगरों से चलकर कस्बों और देहातों तक को अपनी चपेट में ले चुकी है। मकानों में रहने वाले एक-दूसरे को नहीं जानते। इन जगहों में आदमी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। यदि आपको फ्लैट नंबर मालूम नहीं है तो उसी बिल्डिंग में जा कर भी वांछित व्यक्ति को नहीं ढूँढ पाएँगे। ऐसी जगहों में किसी प्रकार के संबंधों की अपेक्षा ही कहाँ की जा सकती है?

I. 'प्राइवेसी' से तात्पर्य है

(क) निजता (ख) आत्मीयता
(ग) मेल-जोल (घ) भाईचारा

II. मुहल्लेदारी के बारे में क्या सच नहीं है?

(क) आपस में मिल-जुलकर रहना
(ख) दु:ख-सुख में साथ देना
(ग) अपनी बात किसी से गुप्त न रखना
(घ) आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

III. आज के व्यक्ति को 'प्राइवेसी' के नाम पर प्राप्त हुआ है

(क) अलगाव और अकेलापन
(ख) अपने में ही सीमित होने का आनंद
(ग) संयुक्त परिवार की समस्याओं से मुक्ति
(घ) मुहल्ले के झंझटों से छुटकारा

IV. 'ताक पर रखना' का अर्थ है

(क) उपेक्षा करना (ख) आशा रखना
(ग) छोड़ देना (घ) निंदा करना

V. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है

(क) बदलते समय में संबंधों का ह्रास
(ख) बदलते समय में आत्मीयता का भाव
(ग) बदलते समय में पारिवारिक आत्मीयता
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश 11

नेहरू के संबंध में लोगों के मानस-पटल पर जो चित्र अंकित हैं, उनमें नेहरू ऐसे व्यक्ति के रूप में विद्यमान हैं जो वैभव में पले, जिन्हें सदा मोटर और हवाई-जहाज़ की सुविधाएँ प्राप्त रहीं, जिनको नेतृत्व पैदायशी हक के रूप में मिल गया, जिन्होंने कभी धन का अभाव जाना ही नहीं। नेहरू के ये चित्र ध्यान में आते ही नहीं कि पिता की मोटर और बग्घी है, किंतु नेहरू धूप में गाँव-गाँव पैदल घूम रहे हैं; थकान के बाद चाय पीने को मन करता है तो जेब में इतने पैसे नहीं कि पाँच-सात साथी चाय पी सकें। विदेशों में प्रचार के लिए डाक-व्यय मुश्किल से ही जुट पाता है।

घर में कर्ज़ बढ़ गया है—चुकाने के लिए माता और पत्नी के ज़ेवर, चाँदी के बरतन और कीमती क्रॉकरी कलकत्ते के बाज़ार में चुपके-चुपके ले जाई गई हैं। माता-पिता की मृत्यु हो गई है और क्षय से पीड़ित पत्नी विदेश में पड़ी है। देश में दमन-चक्र चल रहा था, स्वयं जेल में बंद चिंता से छटपटा रहे थे। किंतु कर्मयोगी नेहरू ने जेल की नौ वर्ष की इस यातना-भरी अवधि में ही विश्व-साहित्य की अमर कृतियाँ रचीं।

मानसिक वेदनाओं का लंबा इतिहास! आज़ादी मिली, तो देश के टुकड़े हो गए; आदमी जानवर बन गया, लाखों इंसानों के लंबे काफ़िले कुटुंबियों की बेकफ़न लाशों को छोड़कर राजधानी आ गए। अहिंसा, सत्य, प्रेम, त्याग—सारा दर्शन और आदर्श ध्वस्त हो गए और गांधी की हत्या कर दी गई है। भारत गणतंत्र की डगर पर डगमग कदमों से चलना सीख ही रहा था कि चीन ने भारत के गले में मित्रता की एक बाँह डाले-डाले, दूसरे हाथ से कमर में छुरा भोंक दिया। इन परिस्थितियों में भी उस कर्मयोगी ने साहस का परित्याग नहीं किया।

I. नेहरू के विषय में देशवासियों की धारणा थी कि वे

(क) देश का प्रधानमंत्री बनने का स्वप्न देखते थे
(ख) जन्मजात वैभवशाली एवं सुविधासंपन्न व्यक्ति थे
(ग) प्रधानमंत्री बनकर तानाशाही करना चाहते थे
(घ) पुस्तकें लिखकर आमदनी बढ़ाना चाहते थे

II. देश की आज़ादी के लिए नेहरू ने क्या नहीं भोगा?

(क) धन का अभाव (ख) जेल-यात्रा
(ग) पत्नी से वियोग (घ) वैभवपूर्ण जीवन

III. विभिन्न समस्याओं से जूझते हुए भी उनका अमूल्य योगदान किस क्षेत्र में था?

(क) नवयुवकों में देश-प्रेम के भाव जगाना
(ख) अशिक्षित समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार
(ग) अहिंसा के आधार पर आज़ादी के लिए प्रयास
(घ) नौ वर्ष तक जेल में रहकर अमर कृतियों की रचना

IV. "विदेशों में प्रचार के लिए पत्र-व्यवहार करना पड़ता है, किंतु जितना डाक-व्यय चाहिए पूरा नहीं पड़ता" वाक्य का प्रकार है

(क) सरल (ख) संयुक्त
(ग) मिश्र (घ) साधारण

V. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है

(क) अशिक्षित समाज में शिक्षा का प्रचार करते नेहरू
(ख) देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत नेहरू
(ग) देश की आज़ादी में नेहरू का योगदान
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश 12

खनन के बाद खदानों वाले स्थानों को गहरी खाइयों और मलबे के साथ खुला छोड़ दिया जाता है। खनन के कारण झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उड़ीसा जैसे राज्यों में वनोन्मूलन भूमि निम्नीकरण का कारण बना है। गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में अति पशुचारण भूमि निम्नीकरण का मुख्य कारण है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में अधिक सिंचाई भूमि निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी है। अति सिंचन से उत्पन्न जलाक्रांतता भी भूमि निम्नीकरण का मुख्य कारण है जिससे मृदा में लवणीयता और क्षारीयता बढ़ जाती है। खनिज प्रक्रियाएँ जैसे सीमेंट उद्योग में बहुत अधिक मात्रा में वायुमंडल में धूल विसर्जित होती है। जब इसी परत भूमि पर जम जाती है तो मृदा की जल सोखने की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है। पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न भागों में औद्योगिक जल निकास से बाहर जाने वाला अपशिष्ट पदार्थ भूमि और जल प्रदूषण का मुख्य स्रोत है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भूमि निम्नीकरण की समस्याओं को सुलझाने के कई तरीके हैं। वनारोपण और चरागाहों का उचित प्रबंधन इसमें कुछ हद तक मदद कर सकते हैं। पेड़ों की रक्षक मेखला, पशुचारण नियंत्रण और रेतीले टीलों को काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर स्थिर बनाने की प्रक्रिया से भी भूमि कटाव की रोकथाम की जा सकती है। बंजर भूमि के उचित प्रबंधन, खनन नियंत्रण और औद्योगिक जल को परिष्करण के पश्चात् विसर्जित करके जल और भूमि प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

I. भूमि निम्नीकरण के क्या-क्या कारण बताए गए हैं?
(क) वनों की कटाई (ख) अधिक सिंचाई
(ग) खनन, अति पशुचारण (घ) ये सभी

II. मृदा के जल सोखने की प्रक्रिया किस कारण अवरुद्ध होती है?
(क) सीमेंट उद्योग से अधिक धूल विसर्जन की परत जम जाने के कारण
(ख) अत्यधिक वर्षा होने पर पानी भर जाने के कारण
(ग) पेड़ों की कटाई अधिक न होने के कारण
(घ) पशु पालन को बढ़ावा देने के कारण

III. भूमि निम्नीकरण से बचने के क्या तरीके हैं?
(क) पशुचारण
(ख) वनारोपण व चरागाहों का उचित प्रबंधन
(ग) जल प्रदूषण
(घ) पेड़ों की कटाई

IV. कौन-कौन से राज्य वनोन्मूलन के लिए उत्तरदायी हैं?
(क) झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा
(ख) झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश
(ग) छत्तीसगढ़, उड़ीसा
(घ) महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश

V. गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए
(क) जीवन का रहस्य
(ख) पर्यावरण
(ग) जीवन की पहेली
(घ) भूमि निम्नीकरण की समस्या

गद्यांश 13

संसार में अमरता ऐसे ही लोगों को मिलती है, जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं, जिनका स्थायी मूल्य होता है। बहुधा यही देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति संपन्न परिवार में बहुत कम पैदा होते हैं। अधिकांश ऐसे लोगों का जन्म मध्यम वर्ग के घरों में या गरीब परिवार में ही होता है। इस तरह का पालन-पोषण साधारण परिवार में होता है और वे सादा जीवन बिताने के आदी हो जाते हैं। मनुष्य में विनय, उदारता, कष्ट-सहिष्णुता, साहस आदि चारित्रिक गुणों का विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ता है। ये गुण व्यक्ति को अहंकारहीन या सादा-सरल बनाते हैं। सादा जीवन या सादगी का अर्थ है, रहन-सहन, वेशभूषा और आचार-विचार का एक निर्दिष्ट स्तर। जीवन में सादगी लाने के लिए दो बातें विशेष रूप से अनुकरणीय हैं, प्रथम कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में धैर्य को न छोड़ना, द्वितीय अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बनाना।

सादगी का विचारों से भी घनिष्ठ संबंध है। सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च रखना चाहिए। व्यक्ति की सच्ची पहचान उसके विचारों और करनी से होती है। मनुष्य के विचार उसके आचरण पर प्रभाव डालते हैं और उसके विवेक को जाग्रत रखते हैं। विवेकशील व्यक्ति ही अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखता है, उन्हें अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को कभी हतप्रभ होकर अपने आत्मसम्मान पर आँच नहीं आने देनी चाहिए। सादगी मनुष्य के चरित्र का अंग है, वह बाहरी चीज नहीं है।

महात्मा गाँधी सादा जीवन पसंद करते थे और हाथ के कते और बुने खद्दर के मामूली वस्त्र पहनते थे, किंतु अपने उच्च विचारों के कारण वे संसार में वंदनीय हो गए।

I. महापुरुष प्रायः कैसे परिवार में जन्म लेते हैं?
(क) गरीब वर्गीय परिवार में
(ख) मध्यवर्गीय परिवार में
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) उच्चवर्गीय परिवार में

II. कौन-सा गुण व्यक्ति को अहंकारहीन बनाता है?
(क) विनय (ख) साहस
(ग) उदारता (घ) ये सभी

III. जीवन को सरल और सादा बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
(क) ईर्ष्या-द्वेष का परित्याग
(ख) सांसारिक मोह-माया से मुक्ति
(ग) कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य न छोड़ना
(घ) अपनी आवश्यकताओं को अधिकतम बनाए रखना

IV. व्यक्ति की सच्ची पहचान किससे होती है?
(क) उसके रहन-सहन के ढंग से
(ख) उसकी भाषा से
(ग) उसके विचारों और करनी से
(घ) उसके सामाजिक स्तर से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?

(क) सादा जीवन उच्च विचार
(ख) मनुष्य की विचारधारा
(ग) जीवन का रहस्य
(घ) सामाजिक स्थिति का निर्धारण

गद्यांश 14

साधारण तौर पर जब हम साफ रात्रि में आकाश की ओर देखते होंगे तो हमें दूर-दूर तक हजारों तारे टिमटिमाते हुए दिखाई देते होंगे। उन्हें देखकर लगता है कि जैसे किसी ने उन्हें आकाश की काली पृष्ठभूमि पर चिपका रखा है। कई बार हमें आश्चर्य होता कि वे हर रात एक ही जगह कैसे बने रहते हैं, गिर क्यों नहीं जाते? वैज्ञानिक तथ्य तो यह है कि तारे वास्तव में एक जगह स्थिर नहीं रहते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी तथा अन्य आठ ग्रह सूर्य के चारों ओर अपने-अपने पथ पर चलते रहते हैं। वे भी उसी प्रकार अपने पथ पर धीरे-धीरे चलते रहते हैं। हमें लगता है कि तारे एक ही जगह स्थिर हैं, क्योंकि हम उन्हें चलते हुए नहीं देख सकते हैं। इसका कारण यह है कि वे हमसे हजारों हजार किलोमीटर दूर हैं। जब वे चलते हुए भी होते हैं तब भी ऐसा लगता है कि वे एक ही जगह हैं। इसके अतिरिक्त एक शक्ति है, जिसे हम गुरुत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं, जिसके कारण चलते समय भी तारे अपने पथ पर बने रहते हैं। वह उनको एक-दूसरे से टकराने से भी बचाती है।

I. आकाश की काली पृष्ठभूमि पर किसके चिपके होने की बात की गई है?

(क) सूर्य के (ख) टिमटिमाते तारों के
(ग) वैज्ञानिकों के (घ) चमकते चाँद के

II. इस गद्यांश में किस वैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख किया गया है?

(क) परिभ्रमण (ख) परिक्रमा
(ग) गुरुत्वाकर्षण शक्ति (घ) दैनिक गति

III. हम तारों को चलते हुए क्यों नहीं देख सकते?

(क) क्योंकि वे टिमटिमाते हैं
(ख) क्योंकि वे हमसे दूर हैं
(ग) धार्मिक अंधविश्वास है
(घ) गुरुत्वाकर्षण शक्ति से वे स्थिर रहते हैं

IV. पृथ्वी एवं अन्य ग्रह किसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं?

(क) चाँद के (ख) सूर्य के
(ग) धरती के (घ) विश्व के

V. उपरोक्त गद्यांश का क्या शीर्षक हो सकता है?

(क) आकाश के वैज्ञानिक तथ्य
(ख) विज्ञान एक चमत्कार
(ग) आकाश के तारे
(घ) तारे और हम

गद्यांश 15

मनुष्यता बौद्धिकता में निवास न करके, उसके व्यवहार में निवास करती है। व्यवहार में बौद्धिकता का समावेश तब ही हो सकता है, जब सद्बुद्धि मौजूद हो, सद्विवेक उपस्थित हो और सद्बुद्धि या सद्विवेक यथार्थ में सुमति ही है। सुमतिसंपन्न व्यक्ति को अनेक अनमोल निधियाँ प्राप्त होती हैं।

व्यक्ति को सुमतिसंपन्न बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका उसकी शिक्षा एवं समाजीकरण निभाता है। इसी से किसी व्यक्ति के विवेकयुक्त व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उचित शिक्षा व्यक्ति को विनम्रता एवं शालीनता का पाठ पढ़ाती है और उसे स्वावलंबी बनाती है। शिक्षा ही उचित-अनुचित, अच्छे-बुरे आदि में अंतर करने की दिव्य-दृष्टि प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति सही-गलत, सत्य-असत्य की पहचान कर सकने में सक्षम बनता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा विद्यार्थियों में उच्च चारित्रिक गुणों का निर्माण करके उनमें देश एवं समाज के प्रति उदात्त भावनाओं का विकास करती है अर्थात् समाज के अन्य सदस्यों के प्रति सद्विचार उत्पन्न करती है और सुमतिसंपन्न व्यक्ति निरंतर न सिर्फ़ अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, बल्कि इससे समाज एवं राष्ट्र भी प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। जब मनुष्य में सद्विवेक उत्पन्न होगा, तो वह एक-दूसरे से ईर्ष्या एवं द्वेष करना छोड़ देगा।

जातीयता, सांप्रदायिकता, प्रांतीयता, अंध-क्षेत्रीयता आदि से संबंधित स्थापित संकीर्ण मान्यताओं को अस्वीकार कर सकेगा। धर्म एवं जाति की संकीर्ण कलुषित मानसिकता की जकड़न को तोड़कर वह इतना अहसास कर पाएगा कि सभी बंधनों से पूर्व सर्वप्रथम हम मानव हैं और मानव होने के नाते हमारे कुछ सामान्य लक्ष्य हैं, जिन्हें प्राप्त करना सभी मनुष्यों का धर्म है। इससे धर्म, सत्ता, अर्थ एवं वि-संस्कृति की अंधानुकृति के कारण लोप हो रही मानवता की पुनर्स्थापना की जा सकती है।

I. कुशल बुद्धि के निर्माण में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है?

(क) विनम्रता का
(ख) शिक्षा का
(ग) समाजीकरण का
(घ) (ख) और (ग) दोनों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. शिक्षा किस प्रकार समाज एवं देश की प्रगति में सहयोग करती है?

(क) व्यक्ति में चारित्रिक गुणों का विकास करके
(ख) समाज के अन्य व्यक्तियों के प्रति सद्‌भावना विकसित करके
(ग) समाज के प्रति आदर सम्मान की भावना विकसित करके
(घ) उपरोक्त सभी

III. मनुष्य किसके माध्यम से स्वावलंबी बनता है?

(क) उच्च विचार के (ख) उच्च आदर्श के
(ग) शिक्षा के (घ) ईर्ष्या के

IV. मनुष्य जातीयता, सांप्रदायिकता, प्रांतीयता की संकीर्ण मान्यताओं को अस्वीकार कब करता है?

(क) जब वह धनी हो जाता है
(ख) जब वह निर्धन हो जाता है
(ग) जब उसमें सद्‌विवेक उत्पन्न होता है
(घ) जब वह बंधनपूर्ण जीवन जीता है

V. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) सांप्रदायिकता का जहर
(ख) मनुष्य का धर्म
(ग) बौद्धिकतापूर्ण मानवता की पुनर्स्थापना
(घ) शिक्षा और समाज

गद्यांश 16

सिनेमा जगत के अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों और निर्देशकों को हिंदी के माध्यम से पहचान मिली है। यही कारण है कि गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी की ओर आए हैं। समय और समाज के उभरते सच को परदे पर पूरी अर्थवत्ता में धारण करने वाले ये लोग दिखावे के लिए भले ही अंग्रेज़ी के आग्रही हों, लेकिन बुनियादी और ज़मीनी हकीकत यही है कि इनकी पूँजी, इनकी प्रतिष्ठा का एकमात्र निमित्त हिंदी ही है।

लाखों- करोड़ों दिलों की धड़कनों पर राज करने वाले ये सितारे हिंदी फ़िल्म और भाषा के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। 'छोटा परदा' ने आम जनता के घरों में अपना मुकाम बनाया तो लगा हिंदी आम भारतीय की जीवन-शैली बन गई। हमारे आद्यग्रंथों रामायण और महाभारत को जब हिंदी में प्रस्तुत किया गया तो सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया। 'बुनियाद' और 'हम लोग' से शुरू हुआ सोप ऑपेरा का दौर हो या सास-बहू धारावाहिकों का, ये सभी हिंदी की रचनात्मकता और उर्वरता के प्रमाण हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' से करोड़पति चाहे जो बने हों, पर सदी के महानायक की हिंदी हर दिल की धड़कन और हर धड़कन की भाषा बन गई।

सुर और संगीत की प्रतियोगिताओं में कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, सिक्किम जैसे गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से पहचान बनाई। ज्ञान गंभीर 'डिस्कवरी' चैनल हो या बच्चों को रिझाने-लुभाने वाला 'टॉम एंड जेरी'। इनकी हिंदी उच्चारण की मिठास और गुणवत्ता अद्‌भुत, प्रभावी और ग्राह्य है। धर्म-संस्कृति, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान सभी कार्यक्रम हिंदी की संप्रेषणीयता के प्रमाण हैं।

I. गैर-हिंदी भाषी कलाकारों के हिंदी सिनेमा में आने का क्या कारण था?

(क) हिंदी के माध्यम से अपनी पहचान बनाना
(ख) हिंदी के माध्यम से अंग्रेजी को बढ़ावा देना
(ग) अंग्रेजी भाषा का महत्त्व बताना
(घ) अंग्रेजी भाषा को विश्वस्तरीय भाषा बनाना

II. फिल्मों तथा टी.वी. ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में क्या भूमिका निभाई है?

(क) हिंदी का विकास अवरुद्ध हो गया
(ख) हिंदी का क्षेत्र सीमित हो गया
(ग) हिंदी साधारण भारतीय की जीवन-शैली बन गई
(घ) हिंदी अंग्रेजी के समक्ष कमजोर पड़ गई

III. निम्नलिखित में से किसकी हिंदी ने दर्शक वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया?

(क) रामायण की (ख) सास-बहू धारावाहिक की
(ग) सदी के महानायक की (घ) डिस्कवरी चैनल की

IV. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) टी.वी. चैनल का इतिहास
(ख) हिंदी भाषा की गुणवत्ता एवं उपयोगिता
(ग) हिंदी भाषा बनाम अंग्रेजी भाषा
(घ) हिंदी धारावाहिक

V. गद्यांश के आधार पर बताइए कि हिंदी की संप्रेषणीयता के क्या प्रमाण हैं?

(क) गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों द्वारा हिंदी को अपनाना
(ख) गैर-हिंदी राज्यों के कलाकारों द्वारा हिंदी को अपनी पहचान के रूप में चुनना
(ग) डिस्कवरी चैनल का हिंदी में अनुवाद होना
(घ) उपरोक्त सभी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश 17

राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय एवं विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्त्व है। मानव समुदाय अपनी संवेदनाओं, भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का साधन अपरिहार्यत: अपनाता है। इसके अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं है। दिव्य ईश्वरीय आनंदानुभूति के संबंध में भले ही कबीर ने 'गूंगे केरी शर्करा' उक्ति का प्रयोग किया था, परंतु इससे उनका लक्ष्य शब्दरूपी भाषा के महत्त्व को नकारना नहीं था।

प्रत्युत उन्होंने भाषा को 'बहता नीर' कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी। विद्वानों की मान्यता है कि जिस प्रकार किसी एक राष्ट्र के भू-भाग की भौगोलिक विविधताएँ तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताओं आदि की बाधाएँ उस राष्ट्र के निवासियों के परस्पर मिलने-जुलने में अवरोधक सिद्ध हो सकती हैं, उसी प्रकार भाषागत विभिन्नता से भी उनके पारस्परिक संबंधों में निर्बाधता नहीं रह पाती। आधुनिक विज्ञान के युग में यातायात एवं संचार के साधनों की प्रगति से जिस प्रकार भौगोलिक बाधाएँ अब पहले की तरह बाधित नहीं करतीं, उसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक संपर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक संबंधों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं।

मानव का अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इसके व्यक्तित्व को साकार करती है। उसके अमूर्त मानसिक वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं बिंबात्मक रूप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं। उनकी विविध भावनाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं, संकल्प एवं आदर्श हैं। उन्हें भाषा ही अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। साहित्य, शास्त्र, गीत-संगीत आदि में मानव समुदाय अपने आदर्शों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं एवं विशिष्टताओं को वाणी देता है। भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य एक-दूसरे के निकट आ सकते हैं। उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। अत: राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा- तत्त्व परम आवश्यक है।

I. देश के हित के लिए संपर्क भाषा क्यों आवश्यक है?
(क) देश की एकता व अखंडता बनाए रखने के लिए
(ख) एक-दूसरे को समझने के लिए
(ग) अपने विचार प्रकट करने के लिए
(घ) उपरोक्त सभी

II. राष्ट्र की एक संपर्क भाषा का विकास होने से क्या होगा?
(क) विभिन्न समुदायों में आपसी मतभेद
(ख) मानव जीवन का स्वरूप बदलना
(ग) पारस्परिक संबंधों के गतिरोध की समाप्ति
(घ) साहित्य और संगीत का मिलन

III. मनुष्य को परस्पर जोड़ने का कार्य कौन करता है?
(क) समाज (ख) परिवार
(ग) देश (घ) भाषा

IV. कबीर ने भाषा को किस प्रकार गरिमा प्रदान की?
(क) गूँगे केरी शर्करा कहकर
(ख) भाषा बहता नीर कहकर
(ग) भाषा के शब्दरूपी महत्त्व को नकारकर
(घ) भाषा को अपरिहार्य साधन कहकर

V. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(क) कबीर की भाषा
(ख) राष्ट्र की भाषा
(ग) भाषा की उपयोगिता
(घ) भाषा और मानव का इतिहास

गद्यांश 18

फिजूलखर्ची एक बुराई है, इसके पीछे बारीकी से नज़र डालें तो अहंकार नज़र आएगा। अहं के प्रदर्शन से तृप्ति मिलती है। अहं की पूर्ति के लिए कई बार बुराइयों से रिश्ता भी जोड़ना पड़ता है। अहंकारी लोग बाहर से भले ही गंभीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन से भरे रहते हैं।

जब कभी समुद्र तट पर जाने का मौका मिले, तो आप देखेंगे कि लहरें आती हैं, जाती हैं और चट्टानों से टकराती हैं। पत्थर वहीं रहते हैं, लहरें उन्हें भिगोकर लौट जाती हैं। हमारे भीतर हमारे आवेगों की लहरें भी हमें ऐसे ही टक्कर देती हैं।

इन आवेगों, आवेशों के प्रति अडिग रहने का अभ्यास करना होगा, क्योंकि अहंकार यदि लंबे समय तक टिकने की तैयारी में आ जाए, तो वह नए-नए तरीके ढूँढेगा। स्वयं को महत्त्व मिले अथवा स्वेच्छाचारिता के प्रति आग्रह, ये सब धीरे-धीरे सामान्य जीवन-शैली बन जाती है। ईसा मसीह ने कहा है—''मैं उन्हें धन्य कहूँगा, जो अंतिम हैं।'' आज के भौतिक युग में यह टिप्पणी कौन स्वीकारेगा, जब 'चारों ओर नंबर वन' होने की होड़ लगी है।

ईसा मसीह ने इसी में आगे जोड़ा है कि ''ईश्वर के राज्य में वही प्रथम होंगे, जो अंतिम हैं और जो प्रथम होने की दौड़ में रहेंगे, वे अभागे रहेंगे।'' यहाँ 'अंतिम' होने का संबंध लक्ष्य और सफलता से नहीं है। जीसस ने विनम्रता, निरहंकारिता को शब्द दिया है 'अंतिम'। आपके प्रयास व परिणाम प्रथम हों, अग्रणी रहें, पर आप भीतर से अंतिम हों यानी विनम्र, निरहंकारी रहें। अन्यथा अहं अकारण ही जीवन के आनंद को खा जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

I. प्रस्तुत गद्यांश में फिजूलखर्ची को सूक्ष्म दृष्टि से क्या कहा गया है?

(क) पैसे का बेहतर उपयोग (ख) अहंकार का प्रदर्शन
(ग) बुराइयों की जड़ (घ) सामान्य जीवन-शैली

II. अहंकारी व्यक्तियों की किन कमियों की ओर संकेत किया गया है?

(क) अहंकारी व्यक्ति भीतर से उथलेपन से भरे होते हैं
(ख) अहंकारी व्यक्ति सतही मानसिकता रखते हैं
(ग) अहंकारी व्यक्ति किसी भी प्रकार से अपने अहं का प्रदर्शन करना चाहते हैं
(घ) उपरोक्त सभी

III. लेखक ने मानव मन में उद्वेलित होने वाली भावनाओं की तुलना किससे की है?

(क) ईसा मसीह से (ख) समुद्र तट की लहरों से
(ग) भौतिक आकांक्षाओं से (घ) निरहंकार से

IV. जीसस के अनुसार, मनुष्य को भीतर से कैसा होना चाहिए?

(क) विनम्र (ख) निरहंकारी
(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) स्वेच्छाचारी

V. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) अहंकार : एक बड़ा अवगुण
(ख) फिजूलखर्ची का महत्त्व
(ग) मनुष्य की जीवन-शैली
(घ) जीसस के विचार

गद्यांश 19

शिक्षा ही मानव को मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है। शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्त्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना, दु:खियों के दु:ख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दु:ख से दु:खी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं।

इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्यार्थी विद्वान् ही नहीं बनता, वरन् उसमें एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि, रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवनयापन करता है। आज आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण में छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं, जिसके कारण रूस की क्रांति, फ्रांस की क्रांति, अमेरिका की क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोज़गारोन्मुखी रूप है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता।

I. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) शिक्षा का दुरुपयोग
(ख) शिक्षा का महत्त्व
(ग) शिक्षित व्यक्ति और शिक्षा
(घ) आधुनिक शिक्षा व्यवस्था

II. विद्यार्थी में नवीन जीवन-दृष्टि का निर्माण किसके द्वारा होता है?

(क) विभिन्न प्रकार की यात्राओं से
(ख) विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के अध्ययन से
(ग) दूसरों की सहायता करने से
(घ) अपने परिवेश के प्रति जागरूक होने से

III. शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण किसे माना जाता है?

(क) सैद्धांतिक शिक्षा को
(ख) मौलिक शिक्षा को
(ग) व्यावसायिक शिक्षा को
(घ) नैतिक शिक्षा को

IV. व्यावसायिक शिक्षा का दुष्परिणाम किस रूप में सामने आता है?

(क) व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को सामान्य विषयों की जानकारी न होना
(ख) व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर न बनना
(ग) व्यावसायिक शिक्षा द्वारा रोजगारोन्मुखी न बनना
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

V. 'शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है' पंक्ति का क्या आशय है?

(क) शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बना रही है
(ख) शिक्षा मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है
(ग) शिक्षा से जीवन में साधन प्राप्त किए जा रहे हैं
(घ) शिक्षा से मानवीय मूल्यों का विकास हो रहा है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश 20

भारत की जलवायु में काफी क्षेत्रीय विविधता पाई जाती है। संपूर्ण विश्व आज जिस बड़ी समस्या से जूझ रहा है, वह है—जलवायु परिवर्तन। जलवायु परिवर्तन आज एक ऐसी विश्वस्तरीय समस्या का रूप ले चुका है, जिसके समाधान के लिए संपूर्ण विश्व को संयुक्त रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सतत प्रयास करने की आवश्यकता है। सामान्य मौसमी अभिवृत्तियों में किसी विशेष स्थान पर होने वाले विशिष्ट परिवर्तन को ही जलवायु परिवर्तन कहते हैं। मौसम में अचानक परिवर्तन, फसल-चक्र का परिवर्तित होना, वनस्पतियों की प्रजातियों का लुप्त होना, तापमान में वृद्धि, हिमनदों का पिघलना और समुद्र जल-स्तर में लगातार वृद्धि ऐसे सूचक हैं, जिनसे जलवायु परिवर्तन की परिघटना का पता चलता है।

हिमनदों का पिघलना जलवायु परिवर्तन का सबसे संवेदनशील सूचक माना जाता है। पृथ्वी पर हिमनदों के लगातार कम होने तथा उनके स्तर के नीचे खिसकने से समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि हुई है। जलवायु परिवर्तन के पीछे कोई एक कारण नहीं है, किंतु वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा के निरंतर बढ़ते रहने को इसका सबसे बड़ा कारण माना जाता है। पृथ्वी पर आने वाली सौर ऊर्जा की बड़ी मात्रा अवरक्त किरणों के रूप में पृथ्वी के वातावरण से बाहर चली जाती है। इस ऊर्जा की कुछ मात्रा ग्रीन हाउस गैसों द्वारा अवशोषित होकर पुन: पृथ्वी पर पहुँच जाती है, जिससे तापक्रम अनुकूल बना रहता है। ग्रीन हाउस गैसों में मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड इत्यादि शामिल हैं। वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का होना अच्छा है, किंतु जब इनकी मात्रा बढ़ जाती है, तो तापमान में वृद्धि होने लगती है। इससे जो समस्या सामने आई है, उसे 'ग्लोबल वार्मिंग' अर्थात् 'वैश्विक तापवृद्धि' की संज्ञा दी गई है। वास्तव में, ग्लोबल वार्मिंग जलवायु परिवर्तन का ही एक रूप है।

I. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) जलवायु परिवर्तन की समस्या
(ख) ग्रीन हाउस का प्रभाव
(ग) पृथ्वी का बढ़ता तापमान
(घ) हिमनदों का पिघलना

II. गद्यांश में जलवायु परिवर्तन का सबसे संवेदनशील सूचक किसे माना जाता है?

(क) तापमान में वृद्धि को
(ख) मौसम में परिवर्तन को
(ग) हिमनदों के पिघलने को
(घ) समुद्र जल स्तर में वृद्धि को

III. वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा बढ़ जाने के फलस्वरूप किसकी समस्या उत्पन्न होती है?

(क) तापमान में वृद्धि की (ख) वैश्विक तापवृद्धि की
(ग) तापमान में कमी की (घ) वैश्विक प्रदूषण की

IV. समुद्र के जल स्तर में वृद्धि होने का एक प्रमुख कारण क्या है?

(क) फसल चक्र में परिवर्तन होना
(ख) वनस्पति प्रजातियों का लुप्त होना
(ग) हिमनदों के स्तर का नीचे खिसकना
(घ) ये सभी

V. सौर ऊर्जा की कुछ मात्रा ग्रीन हाउस गैसों द्वारा अवशोषित होकर पुनः पृथ्वी पर पहुँच जाती है, इसका तापक्रम पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) तापक्रम कम हो जाता है
(ख) तापक्रम अनुकूल बना रहता है
(ग) तापक्रम बढ़ जाता है
(घ) तापक्रम में आंशिक परिवर्तन होता है

गद्यांश 21

समाज-कल्याण क्या है, इसकी पूर्ण तथा सांगोपांग परिभाषा देते समय मतभेद हो सकता है, किंतु जहाँ तक इसके सार-तत्त्व को समझने की बात है, लोगों में एक प्रकार से सामान्य सहमति मालूम पड़ती है। इसका तात्पर्य एक व्यक्तिगत सेवा से है, जो विशेष प्रकार की न होकर सामान्य प्रकार की होती है। इसका उद्देश्य किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता करना है, जो असमर्थता की भावना से दु:खी होने पर भी अपने जीवन का सर्वोत्तम सदुपयोग करना चाहता है अथवा उन कठिनाइयों पर विजयी होना चाहता है, जो उसे पराजित कर चुकी हैं अथवा पराजय की आशंकाएँ उत्पन्न करती हैं।

समाज-कल्याण की भावना दुर्बल की सहायता करती है तथा अपरिवर्तनीय स्थितियों के साथ संबंध सुधारने या सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न करती है। इसके सर्वोच्च आदर्शों का सही-सही निरूपण स्वास्थ्य-मंत्रालय के एक परिपत्र द्वारा निर्दिष्ट वाक्य में किया गया है, जिसका संबंध विकलांगों के कल्याण से है। इसके अनुसार, कल्याणकारी सेवाओं का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि "सभी विकलांग व्यक्तियों को चाहे उनकी अक्षमता कुछ भी हो, सामुदायिक जीवन में हाथ बँटाने तथा उसके विकास में योगदान देने के लिए अधिक-से-अधिक अवसर दिए जाएँगे, ताकि उनकी क्षमताओं का पूर्ण क्रियान्वयन हो सके, उनका आत्मविश्वास जाग सके तथा उनके सामाजिक संपर्क मजबूत बन सकें।"

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

I. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि समाज-कल्याण का उद्देश्य क्या है?

(क) ऐसे व्यक्ति की सहायता करना, जो असमर्थता के बाद भी अपने जीवन का सर्वोत्तम सदुपयोग करना चाहता है
(ख) ऐसे व्यक्ति की सहायता करना, जो उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना चाहता है, जो उसे पराजित कर चुकी हैं
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) ऐसे व्यक्ति की सहायता करना, जो पूर्णतः समर्थ है

II. गद्यांश के आधार पर बताइए कि समाज-कल्याण की भावना किसकी सहायता करती है?

(क) दुर्बल व्यक्ति की (ख) सक्षम व्यक्ति की
(ग) आदर्श व्यक्ति की (घ) इनमें से कोई नहीं

III. "उनका आत्मविश्वास जाग सके तथा उनके सामाजिक संपर्क मजबूत बन सकें", वाक्य में 'उनका' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) केवल दृष्टिहीन व्यक्ति के लिए
(ख) केवल दुर्बल व्यक्ति के लिए
(ग) सभी विकलांग व्यक्तियों के लिए
(घ) उपरोक्त सभी

IV. स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपने परिपत्र में समाज-कल्याण के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, वे हैं

(क) विकलांग व्यक्तियों को अधिक-से-अधिक अवसर देना
(ख) उनकी क्षमताओं का पूर्ण क्रियान्वयन करना
(ग) उनमें आत्मविश्वास जगाना
(घ) उपरोक्त सभी

V. गद्यांश के आधार पर समाज-कल्याण का तात्पर्य है

(क) व्यक्तिगत सेवा से (ख) अव्यक्तिगत सेवा से
(ग) निरव्यक्तिगत सेवा से (घ) ये सभी

गद्यांश 22

प्रत्येक भाषा किसी-न-किसी समाज की मातृभाषा होती है। उसका अपना एक विशिष्ट साहित्य होता है। उस भाषा के साहित्य का अध्ययन करके हम उस भाषा-भाषी समाज के बारे में, उसकी सभ्यता और संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। विदेशी भाषा का अध्ययन बुरी बात नहीं है। इससे हमारी संवेदना व्यापक होती है, हमारे ज्ञान का विस्तार होता है, हमारी मानवीय दृष्टि में व्यापकता आती है और विचारों से उदारता का समावेश होता है।

भाषा किसी जाति की सभ्यता और संस्कृति की वाहक होती है। यदि हमारे पास अपनी भाषा का ज्ञान नहीं होगा, तो हम अपनी पहचान खो देंगे। हमारा हृदय अपनी भाषा या मातृभाषा में बोलता है। हमारा राष्ट्र-हृदय उसमें धड़कता है, इसलिए विदेशी भाषा की अपेक्षा मातृभाषा का महत्त्व अधिक होता है। जब तक कोई राष्ट्र अपनी भाषा को नहीं अपनाता, तब तक वह स्वावलंबी नहीं बन सकता और विकास नहीं कर सकता। मातृभाषा चिंतन और मनन की भाषा होती है। संपूर्ण समाज उसी के माध्यम से स्वयं को व्यक्त करता है। मात्र भाषा ही हमारी पहचान करने का एक साधन है यदि हमें कहीं दूसरे स्थान पर जाना पहचाना जाता है तो वह सिर्फ मातृभाषा ही है, जिसके माध्यम से हम अपने देश व संस्कृति का परिचय कराते हैं।

I. गद्यांश में ऐसा क्यों कहा गया है कि विदेशी भाषा का अध्ययन बुरी बात नहीं है?

(क) इससे सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है
(ख) इससे स्वावलंबी बन जाते हैं
(ग) इससे मानवीय दृष्टि में व्यापकता और विचारों में उदारता आती है
(घ) उपरोक्त सभी

II. मनुष्य स्वावलंबी कब बन सकता है?

(क) जब मनुष्य को अपनी भाषा और साहित्य का ज्ञान हो
(ख) जब अपनी सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान हो
(ग) जब विचारों में उदारता हो
(घ) इनमें से कोई नहीं

III. "उसका अपना एक विशिष्ट साहित्य होता है," पंक्ति में 'उसका' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) विचारों के लिए (ख) मातृभाषा के लिए
(ग) सभ्यता के लिए (घ) संस्कृति के लिए

IV. विदेशी भाषा की अपेक्षा मातृभाषा का महत्त्व अधिक क्यों है?

(क) मातृभाषा में हम अपने भावों और विचारों को व्यक्त करते हैं
(ख) हमारा हृदय मातृभाषा में बोलता है
(ग) मातृभाषा में हमारा राष्ट्र हृदय धड़कता है
(घ) उपरोक्त सभी

V. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) साहित्य और समाज (ख) मातृभाषा का महत्त्व
(ग) भाषा और संस्कृति (घ) विदेशी भाषा व भारत

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश 23

चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझना चाहिए। लोकरक्षा और लोकरंजन की सारी व्यवस्था का ढाँचा इन्हीं पर ठहरा है। धर्म-शासन, राज-शासन, मत-शासन सबमें इनसे पूरा काम लिया गया है। इनका सदुपयोग भी हुआ है और दुरुपयोग भी। जिस प्रकार लोक-कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनुष्य के मनोविकार काम में लाए गए हैं, उसी प्रकार संप्रदाय या संस्था के संकुचित और परिमित विधान की सफलता के लिए भी। सब प्रकार के शासन में चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राज-शासन हो, मनुष्य-जाति से भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है।

दंड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। प्राय: इसके द्वारा भय और लोभ का प्रवर्तन सीमा के बाहर भी हुआ है और होता रहता है। जिस प्रकार शासक वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं, उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी।

शासक वर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शांति के लिए भी डराते और ललचाते आए हैं। मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार के लिए भी कँपाते और डराते आए हैं। एक जाति को मूर्ति-पूजा करते देख दूसरी जाति के मत-प्रवर्तकों ने उसे पापों में गिना है। एक संप्रदाय को भस्म और रुद्राक्ष धारण करते देख दूसरे संप्रदाय के प्रचारकों ने उनके दर्शन तक को पाप माना है।

I. लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा किस पर आधारित है?
(क) सामाजिक न्याय पर
(ख) मनुष्य के भावों के विशेष प्रकार के संगठन पर
(ग) धर्म व्यवस्था के मत पर
(घ) मनुष्य के समुचित क्रिया कर्म पर

II. धर्म-प्रवर्तकों ने स्वर्ग-नरक का भय और लोभ क्यों दिखाया है?
(क) धर्म के मार्ग पर चलने के लिए
(ख) अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए
(ग) अन्याय के पथ पर चल रहे लोगों को सही मार्ग दिखाने के लिए
(घ) उपरोक्त सभी

III. शासन व्यवस्था किन कारणों से भय और लालच का सहारा लेती है?
(क) अन्याय और अत्याचार के विरोध को रोकने के लिए
(ख) द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार को बनाए रखने के लिए
(ग) उनके द्वारा किए गए अत्याचार के विरुद्ध आवाज न उठाने के लिए
(घ) उपरोक्त सभी

IV. किसी जाति विशेष के किन कार्यों को अन्य जाति अनिष्ट कार्य मानती है?
(क) मूर्ति पूजा करना
(ख) भस्म या रुद्राक्ष धारण करना
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) अन्य धर्म का सम्मान न करना

V. आपके अनुसार, प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है?
(क) शासन व्यवस्था और समाज
(ख) धर्म और संस्कृति
(ग) मनुष्य के मनोविकार
(घ) सामाजिक दंड विधान

गद्यांश 24

हरियाणा के पुरातत्त्व विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गाँव में खुदाई और शोध का काम रुक-रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गाँव दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ वर्ष 1963 में खुदाई हुई थी और तब से इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थीं कि यहाँ दबे नगर कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़े रहे होंगे।

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत-पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई कालीबंगा की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इस स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहाँ सम्भवत: सोना ढाला जाता होगा।

इसके अलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक 'फ़र्नेस' के अवशेष भी मिले हैं। मई, 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

राखीगढ़ी का पुरातात्त्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्त्व विशेषज्ञों की रुचि और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बाकि हैं, जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

I. अब सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे माने जाने की संभावनाएँ हैं?

(क) मोहनजोदड़ो (ख) राखीगढ़ी
(ग) हड़प्पा (घ) कालीबंगा

II. चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि

(क) यातायात के साधन थे
(ख) अधिक आबादी थी
(ग) शहर नियोजित था
(घ) बड़ा शहर था

III. इसे एशिया के 'विरासत स्थलों' में स्थान मिला, क्योंकि

(क) नष्ट हो जाने का खतरा है
(ख) सबसे विकसित सभ्यता है
(ग) इतिहास में इसका नाम सर्वोपरि है
(घ) यहाँ विकास की तीन परतें मिली हैं

IV. पुरातत्त्व विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि ले रहे हैं, क्योंकि

(क) काफ़ी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है
(ख) इसका समुचित अध्ययन शेष है
(ग) उत्खनन का कार्य अभी अधूरा है
(घ) इसके बारे में अभी-अभी पता लगा है

V. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) राखीगढ़ी : एक सभ्यता की संभावना
(ख) सिंधु-घाटी सभ्यता
(ग) विलुप्त सरस्वती की तलाश
(घ) एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी

गद्यांश 25

युगों-युगों से मानव इस धरती पर आसरा लिए हुए हैं। प्रत्येक युग प्रतिक्षण परिवर्तित हुआ है, इसलिए कहा गया है कि समय परिवर्तनशील है, जो आज हमारे साथ नहीं है, कल हमारे साथ होंगे और हम अपने दु:ख और असफलता से मुक्ति पा लेंगे, यह विचार ही हमें सहजता प्रदान कर सकता है। हम दूसरे की संपन्नता, ऊँचा पद और भौतिक साधनों की उपलब्धता देखकर विचलित हो जाते हैं कि यह उसके पास तो है, किंतु हमारे पास नहीं है, वह हमारे विचारों की गरीबी का प्रमाण है और यही बात अंदर विकट असहज भाव का संचालन करती है। जीवन में सहजता का भाव न होने के कारण अधिकतर लोग हमेशा ही असफल होते हैं। सहज भाव लाने के लिए हमें नियमित रूप से योगासन-प्राणायाम और ध्यान करने के साथ-साथ ईश्वर का स्मरण अवश्य करना चाहिए।

इसमें हमारे तन-मन और विचारों के विकार बाहर निकलते हैं और तभी हम सहजता के भाव का अनुभव कर सकते हैं। याद रखने की बात है कि हमारे विकार ही हमारे अंदर असहजता का भाव उत्पन्न करते हैं। ईर्ष्या-द्वेष और परनिंदा जैसे गुण हम अनजाने में ही अपना लेते हैं और अंतत: जीवन में हर पल असहज होते हैं। उससे बचने के लिए आवश्यक है कि हम अध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रखें।

I. गद्यांश के आधार पर मनुष्य की वैचारिक गरीबी को प्रकट करने वाले विचार हैं

(क) दूसरों की संपन्नता से विचलित होना
(ख) दूसरों के ऊँचे पद से विचलित होना
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) योगासन से विचलित होना

II. जीवन में सहजता का भाव न होने से अधिकतर लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) जीवन में सफल होते हैं
(ख) जीवन में असफल होते हैं
(ग) असफलता में मुक्ति पाते हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

III. गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सहज भावों को धारण करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

(क) योगासन-प्राणायाम (ख) ईश्वर का स्मरण
(ग) ध्यान करना (घ) ये सभी

IV. मनुष्य में असहजता का विकास कैसे होता है?

(क) अध्यात्म से (ख) विचारों से
(ग) अंदर बैठे विकारों से (घ) इनमें से कोई नहीं

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि यदि हम अध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रखें, तो किससे बचा जा सकता है?

(क) सहजता से

(ख) असहजता से

(ग) सफलता से

(घ) उपरोक्त सभी

गद्यांश 26

पर्यावरण नैतिकता से अभिप्राय विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देशों से है, जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं। मानव केंद्रित विचारधारा के अनुसार, मनुष्य प्रकृति का स्वामी है और वह इसे मनचाहे रूप में प्रयोग कर सकता है। इसके विपरीत, पृथ्वी और प्रकृति केंद्रित विचारधारा के अनुसार, पृथ्वी हमारी जननी है। अत: हमें पृथ्वी का आदर करना चाहिए। पहले मत के अनुसार, पृथ्वी केवल एक ग्रह है। हमें वैज्ञानिक तकनीक द्वारा प्रौद्योगिकी का निरंतर विकास करना है।

इसके लिए पर्यावरण के अपघटन को रोकना होगा, ताकि एक स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण और बेहतर भविष्य की नींव रखी जा सके। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, आधिपत्य के लिए संघर्ष, विश्वयुद्ध आदि ने अपने-अपने ढंग से पर्यावरण को संकट में डाला है। आज फिर आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रकृति के शोषण ने संपूर्ण विश्व में पर्यावरणीय संकट पैदा कर दिया है, जो घातक सिद्ध हो सकता है। यह विवादास्पद है कि विकास आधारित प्रौद्योगिकी वरदान है या विनाश का कारण।

I. पर्यावरण नैतिकता से अभिप्राय है

(क) वे विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देश, जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की केवल क्रिया को दर्शाते हैं

(ख) वे विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देश जो, मनुष्य और पर्यावरण के बीच केवल प्रतिक्रियाओं को दर्शाते है

(ग) वे विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देश, जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

II. मानव केंद्रित विचारधारा के अनुसार प्रकृति का स्वामी है

(क) मनुष्य (ख) वैज्ञानिक

(ग) तकनीक (घ) ये सभी

III. 'पृथ्वी हमारी जननी है' यह विचारधारा है

(क) मानव केंद्रित (ख) पृथ्वी और प्रकृति केंद्रित

(ग) प्रौद्योगिकी केंद्रित (घ) इनमें से कोई नहीं

IV. प्रस्तुत गद्यांश का केंद्रीय भाव है

(क) प्रकृति के दोहन/शोषण पर विचार व्यक्त किए गए हैं

(ख) पर्यावरण के अपघटन को रोकने से एक स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण और बेहतर भविष्य की नींव रखी जा रही है

(ग) (क) और (ख) दोनों

(घ) पर्यावरण को संकट में डालना

V. पर्यावरण के अपघटन के लिए कौन-से कारण जिम्मेदार हैं?

(क) साम्राज्यवाद

(ख) उपनिवेशवाद

(ग) आधिपत्य के लिए संघर्ष

(घ) उपरोक्त सभी

गद्यांश 27

बाल मज़दूरी हमारे देश के लिए अक्षम्य अपराध है। देश में आज न जाने कितने बच्चे बाल मज़दूरी कर रहे हैं, क्या उन्हें हमारी तरह जीने का अधिकार नहीं है? राजेश जोशी ने बड़े ही मार्मिक तरीके से 'बाल-श्रमिक' के ऊपर करुण रस की कविता लिखी है। उनका कहना है 'बच्चे काम पर जा रहे हैं सुबह-सुबह' अर्थात् पढ़ाई-लिखाई छोड़कर बच्चे मज़दूरी करने काम पर जा रहे हैं। क्या उनके जीवन में खेल का मैदान नहीं है? क्या उनके लिए पुस्तकालय और पाठशाला नहीं हैं? इस तरह के भाव-बोध और पीड़ा-बोध से रचित राजेश जोशी की कविता आधुनिक सभ्य समाज के ऊपर एक प्रकार का व्यंग्य भी प्रस्तुत करती है।

वैश्विक स्तर पर शांति के लिए वर्ष 2014 के नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी, जो 'बचपन बचाओ आंदोलन' के सृजनकर्ता माने जाते हैं, का कहना है कि ''बाल-श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।'' उनके जागरूकता अभियान के कारण अब बहुत सीमा तक लोग जानने लगे हैं कि 14 साल के बच्चे से काम कराना एक दंडनीय अपराध है। इसमें उम्र का निर्धारण कर पाना बेहद कठिन काम है। इसमें बच्चों का शोषण करने वाले लोग उनकी उम्र-सीमा 14 वर्ष से ऊपर दिखाकर कानूनी प्रक्रिया से बंधनमुक्त हो जाया करते हैं। यदि कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही की जाए, तो बाल मज़दूरी के ऊपर बहुत सीमा तक लगाम लगाई जा सकती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

I. निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(क) नोबल पुरस्कार प्राप्त कैलाश सत्यार्थी
(ख) बालश्रम : समस्या और समाधान
(ग) पढ़ाई-लिखाई से वंचित बचपन
(घ) बालश्रम : कानूनी प्रक्रिया

II. राजेश जोशी की कविता का मूल आशय क्या है?

(क) कवि धर्म का पालन करना
(ख) बचपन का चित्रण करना
(ग) बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना
(घ) उपरोक्त सभी

III. बाल श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या किसे माना गया है?

(क) विद्यालयों की सीमित संख्या को
(ख) पढ़ाई के प्रति बच्चों की उदासीनता को
(ग) समाज में पढ़ाई को कम महत्त्व देने को
(घ) उम्र का निर्धारण करने को

IV. 'बचपन बचाओ आंदोलन' का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) लोग जानने लगे कि १४ वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है
(ख) लोग जान गए कि शिक्षा का क्या महत्त्व है
(ग) लोग जानने लगे कि खेल भी बच्चों के लिए आवश्यक है
(घ) लोग जानने लगे कि बचपन जीवन का सर्वोत्तम समय है

V. गद्यांश के अनुसार बाल मजदूरी पर रोक कैसे लगाई जा सकती है?

(क) कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही द्वारा
(ख) जागरूकता अभियान द्वारा
(ग) बच्चों को काम पर न भेजकर
(घ) बाल मजदूरी को महत्त्व न देकर

गद्यांश 28

भारत के लिए लोकतंत्र को अपनाया जाना भारत के राष्ट्रीय आंदोलन व जनता की आकांक्षाओं का स्वाभाविक परिणाम था। लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार को करना चाहिए, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है।

लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव शक्ति अभी ख़र्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनने के बदले आज बोझ बन बैठी है, लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान बनाते हैं, उसमें रहने वाले लोग।

लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं तथा फ़ौलाद के कारखाने खोले हैं आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं, परंतु अभी भी करोड़ों लोगों को कार्य के प्रति प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में, होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ कार्य करना शुरू कर दें और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे।

उदाहरण के लिए, गाँव वाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, सिंचाई के लिए कौन-सा साधन सुलभ है और कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

I. गद्यांश के आधार पर बताइए कि लोकतंत्र का मूल तत्त्व क्या है?

(क) कर्त्तव्यपालन
(ख) मानव शक्ति
(ग) आंतरिक शक्ति
(घ) उपरोक्त सभी

II. गद्यांश के आधार पर बताइए कि किसको नींद से झकझोर कर जाग्रत करने की आवश्यकता है?

(क) सरकार को
(ख) देश की विशाल मानव शक्ति को
(ग) लोकतंत्र को
(घ) इनमें से कोई नहीं

III. गद्यांश में सरकार द्वारा किए गए कौन-से कार्यों का उल्लेख किया गया है?

(क) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खुलवाई गईं
(ख) विशाल बाँध बनवाए गए
(ग) कारखाने खुलवाए गए
(घ) उपरोक्त सभी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

IV. गद्यांश में लेखक द्वारा राष्ट्र के नागरिकों को क्या सुझाव दिए गए हैं?

(क) लोग अपनी समझ व आंतरिक ऊर्जा को आधार बनाएँ
(ख) जो भी साधन उपलब्ध हों, उनके आधार पर कार्य आरंभ करें
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) कारखाने खोलें

V. प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने सरकारी व्यवस्था की किस कमी को उजागर किया है?

(क) सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करना
(ख) पंचवर्षीय योजना को
(ग) वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं को
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश 29

शिक्षा किसी भी समाज की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, इसलिए मानव समाज में इसे उच्च प्राथमिकता दी गई है। शिक्षा से तात्पर्य है— शक्ति को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखना, अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ना। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान और अज्ञान के मध्य अंतर को समझकर मनुष्य सही दिशा की ओर बढ़ता है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाता है, परंतु जब समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होता प्रतीत होता है, तब ऐसा समझा जाना तर्कपूर्ण है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है।

ऐसी स्थिति में शिक्षा नीति में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का अनुकरण करने के कारण हम अपनी शिक्षा और संस्कृति को भूल रहे हैं और नैतिकता के पतन की ओर अग्रसर हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी।

नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने का सबसे बड़ा माध्यम होते हैं। शिक्षा मनुष्य का सम्यक् उत्थान करती है। नीति भी मूल रूप से शिष्ट आचरण का ही दिशा-निर्देश करती है। इस प्रकार शिक्षा और नीति का मुख्य उद्देश्य एक ही है।

I. गद्यांश के आधार पर बताइए कि समाज के विकास की प्रक्रिया का अभिन्न अंग क्या है?

(क) शिक्षा (ख) शक्ति
(ग) क्षमता (घ) इनमें से कोई नहीं

II. शिक्षा मनुष्य को किस ओर ले जाती है?

(क) अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर
(ख) ज्ञान से अज्ञान की ओर
(ग) ज्ञान से क्षमताओं की ओर
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

III. गद्यांश के आधार पर बताइए कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में किसे बढ़ावा दिया है?

(क) नीतियों को
(ख) अनुकरण की आदत को
(ग) पतन को
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

IV. प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की विशेषता क्या है?

(क) अनुकरणीय
(ख) अज्ञान की ओर ले जाने वाली
(ग) नीतियों से परिपूर्ण
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

V. प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस विषय में चर्चा की है?

(क) भारतीय शिक्षा पद्धति के विषय में
(ख) पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विषय में
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश 30

सवेरे हम अपनी मंज़िल काठमांडू की ओर बढ़े। पहाड़ी खेतों में मक्के और अरहर की फसलें लहरा रही थीं। छोटे-छोटे गाँव और परकोटे वाले घर बहुत सुंदर लग रहे थे। शाम होते-होते हम काठमांडू पहुँच गए। आज काठमांडू पर लिखते हुए अंगुलियाँ काँप रहीं हैं। वैसे ही जैसे पच्चीस अप्रैल को काठमांडू की धरती काँप उठी थी। न्यूज चैनल जब धरहरा स्तंभ को भरभराकर गिरते दिखा रहे थे, मेरा मन बैठा जा रहा था। क्या हुआ होगा धरहरा के इर्दगिर्द फेरी लगाकर सामान बेचने वालों का और उस बाँसुरी वादक का जिसके सुरों ने मन मोह लिया था? और वे पर्यटक जो धरहरा के सौंदर्य में बिंधे उसका सौंदर्य निहारते। सब कुछ जानते हुए भी मन यही कह रहा है कि सब ठीक हो।

रात को हम बाज़ार गए। बाज़ार इलेक्ट्रॉनिक सामानों से अटा पड़ा था और दुकानों की मालकिनें मुस्तैदी से सामान बेच रही थीं। हमारे हिमालयी क्षेत्रों की तरह यहाँ भी अर्थव्यवस्था का आधार औरतें हैं। क्योंकि पहाड़ों पर पर्याप्त ज़मीन नहीं होती और रोज़गार के साधन भी बहुत नहीं होते, सो घर के पुरुष नीचे मैदानी इलाकों में कमाने जाते हैं और घर परिवार की सारी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ज़िम्मेदारी महिलाएँ उठाती हैं। यहाँ गाँव की महिलाएँ खेती और शहर की महिलाएँ व्यवसाय सँभालती हैं। मैंने देखा वे बड़ी कुशलता से व्यावसायिक दाँव-पेंच अपना रही थीं। हम पोखरा होते हुए लौट रहे थे।

रास्ते भर हिमाच्छादित चोटियाँ आँख मिचौली खेलती रहीं। राह में अनेक छोटे-बड़े नगर-गाँव और कस्बे आते रहे। नेपाली औरतें घरों में काम करती नज़र आ रही थीं। मक्का कटकर घर आ चुकी थी। उसके गुच्छे घर के बाहर खूँटियों के सहारे लटके नज़र आ रहे थे। अब हम काली नदी के साथ-साथ चल रहे थे।

I. काठमांडू पर लिखने के लिए लेखक की अँगुलियाँ क्यों काँप रही थीं?
(क) नेपाल में आया भूकंप याद आ गया
(ख) आतंकवादी हमले की आशंका थी
(ग) लेखक के हाथ में चोट थी
(ग) धरहरा स्तंभ अब कभी नहीं देख पाएगा

II. लेखक दु:खी और हताश क्यों था?
(क) धरहरा स्तंभ भूकंप में तहस-नहस हो गया था
(ख) न्यूज चैनल जब धरहरा स्तंभ दिखा रहे थे
(ग) लग रहा था जीवन क्षणभंगुर है
(घ) प्राकृतिक आपदा कहीं भी आ सकती है

III. फेरीवाले और बाँसुरी वादक के लिए लेखक क्यों दु:खी है?
(क) भूकंप में वे नहीं बचे होंगे
(ख) उनका काम-धंधा ठप्प हो गया होगा
(ग) उनकी मुलाकात को कुछ समय ही हुआ था
(घ) उनसे अच्छी दोस्ती हो गई थी

IV. नेपाल में अर्थव्यवस्था का आधार औरतें क्यों हैं?
(क) पुरुष रोज़गार के लिए बाहर जाकर काम करते हैं
(ख) महिलाएँ ज़्यादा ज़िम्मेदार होती हैं
(ग) महिलाएँ पुरुषों पर कम विश्वास करती हैं
(घ) महिलाएँ मोल-भाव अच्छी तरह करती हैं

V. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक होगा
(क) काठमांडू की यात्रा
(ख) पर्यटन और नेपाल
(ग) बाज़ार सँभालती नेपाली औरतें
(घ) भूकंप के बाद का शहर

व्याख्या सहित उत्तर

1. I. *(ग)* **धरती का नामो-निशान मिट जाएगा** गद्यांश के अनुसार नैनो तकनीक के वजूद में आने का परिणाम यह होगा कि इससे धरती का नामो-निशान मिट जाएगा अर्थात् धरती के अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

II. *(क)* **यह तकनीक संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है** नैनो तकनीक के विरोधी द्वारा इसे मिस्र के पिरामिडों में सोई ममियों से भी ज्यादा अभिशप्त इसलिए माना गया, क्योंकि यह तकनीक संपूर्ण मानव जाति के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

III. *(ग)* **(क) और (ख)** दोनों मानव औजारों का निर्माण करके तथा औद्योगिक क्रांति करके प्रकृति का नियंत्रक बन गया। अत: विकल्प (ग) सही उत्तर है।

IV. *(ख)* **परमाणु और अणुओं को मूलभूत इकाई मानकर इच्छानुसार उत्पाद तैयार करना** गद्यांश के अनुसार नैनो तकनीक परमाणु और अणुओं को मूलभूत इकाई मानकर इच्छानुसार उत्पाद तैयार करना है।

V. *(क)* **यह ऐसी तकनीक है, जो मनुष्य की सोच की सीमा बढ़ा देगी** गद्यांश के अनुसार नैनो तकनीक के महत्त्व के बारे में यह कथन सही है कि यह ऐसी तकनीक है, जो मनुष्य की सोच की सीमा बढ़ा देगी। जबकि अन्य तीनों विकल्प नैनो तकनीक के महत्त्व के संबंध में गलत हैं।

2. I. *(ख)* **धन प्राप्ति के साधन के रूप में** पहले वर्ग के लोग काम को केवल धन प्राप्ति के साधन के रूप में देखते हैं। वे काम कम तथा धन को अधिक महत्व देते हैं।

II. *(ग)* **क्योंकि वे अपने काम से अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें** दूसरे वर्ग के लोग धन इसलिए कमाना चाहते हैं, क्योंकि वे अपने काम से अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। ये लोग काम को पूजा मानते हैं तथा उसे महत्त्व देते हैं।

III. *(क)* **जो काम की तुलना में धन को प्राथमिकता देते हैं** काम करना उनके लिए घृणित है, जो काम की तुलना में धन को प्राथमिकता देते हैं। ऐसे लोग काम को काम न समझकर उसे बोझ समझते हैं और धन कमाने को प्रमुखता प्रदान करते हैं।

IV. *(घ)* **वे काम से छुटकारा पाना चाहते हैं** दूसरे वर्ग के लोगों के विषय में यह कथन सही नहीं है कि वे काम से छुटकारा पाना चाहते हैं, क्योंकि ये लोग काम से छुटकारा नहीं पाना चाहते, बल्कि काम को आनंद के साथ करते हैं। अत: विकल्प (घ) सही उत्तर है।

V. *(घ)* **ये सभी** प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार काम के प्रति समर्पित लोगों के वर्ग में कलाकार, विद्वान, वैज्ञानिक, परंपरागत कारीगर, कुशल मिस्त्री और इंजीनियर लोग आते हैं, क्योंकि इन वर्गों के लोग वस्तुओं को बनाने और सीखने में रुचि लेते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. I. *(घ)* **उपरोक्त सभी** हमारी जड़ों का अतीत से जुड़ा होना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इससे मनुष्य, समाज और राज्य की पहचान होती है तथा उसका महत्त्व जाना जाता है। यदि मनुष्य की जड़ें अतीत में न हों तो उसका कोई महत्त्व नहीं रहता।

II. *(क)* **अपनी पुरानी पीढ़ी के अनुभव** गद्यांश में लेखक के अनुसार अतीत के अंतर्गत अपनी पुरानी पीढ़ी के अनुभव शामिल होते हैं। साथ ही इसमें कई प्रकार की समझ-बूझ भी शामिल होती है।

III. (घ) **सुसंस्कृत दृष्टि अतीत से दूर रहती है** गद्यांश के अनुसार सुसंस्कृत दृष्टि के संदर्भ में यह कथन सही नहीं है कि सुसंस्कृत दृष्टि अतीत से दूर रहती है, क्योंकि सुसंस्कृत दृष्टि अतीत से जुड़ी रहती है। इसमें अतीत के साथ नई दृष्टि की समझ भी होती है।

IV. *(ख)* **जब व्यक्ति किसी चीज को समझता है** सहमति और असहमति का प्रश्न तब उठता है जब व्यक्ति किसी चीज को समझता है। अपनी समझ के अनुसार ही वह किसी चीज के प्रति सहमति और असहमति प्रकट करता है।

V. *(क)* **क्योंकि यह मनुष्य या समाज की पहचान के लिए आवश्यक है** सुसंस्कृत दृष्टि को आवश्यक इसलिए माना गया है, क्योंकि यह मनुष्य या समाज की पहचान के लिए आवश्यक है।

4. I. *(क)* **क्योंकि कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है, क्योंकि कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव सा हो गया है। इसके बिना दुनिया अधूरी जान पड़ती है।

II. *(ख)* **कंप्यूटर कई मानवीय भूलों को निर्णायक रूप से सुधार देता है** गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए यह कंप्यूटर रामबाण औषधि है। अतः कंप्यूटर के महत्त्व के विषय में यह कथन सही है कि कंप्यूटर कई मानवीय भूलों को निर्णायक रूप से सुधार देता है।

III. *(ख)* **अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की** गद्यांश के अनुसार, अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की आवश्यकता ने कंप्यूटर में अपना निदान ढूँढ लिया है।

IV. *(ख)* **गलतियाँ होने के डर से कर्मचारी घबराए हुए रहते थे** कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव इसलिए होता था, क्योंकि पहले इन पर काम करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। इसके परिणामस्वरूप काम कम और तनाव अधिक होता था।

V. (क) **सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं** कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी इसलिए है, क्योंकि वर्तमान समय में सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं।

5. I. *(ग)* **पाठक, जो सपनों की दुनिया में रहना चाहता है** गद्यांश में शुतुरमुर्ग की संज्ञा 'पाठक, जो सपनों की दुनिया में रहना चाहता है' को दी गई है। ऐसे लोग रूढ़िवादी होते हैं।

II. *(ग)* **आधुनिक होने की प्रक्रिया सदा से मानव सभ्यता का अंग रही है** गद्यांश के अनुसार आधुनिकता की दिशा में सुयोजित प्रयास इसलिए होने चाहिए, क्योंकि आधुनिकता होने की प्रक्रिया सदा से ही मानव सभ्यता का अंग रही है।

III. (क) **लोग तुरंत व अधिक-से-अधिक लाभ कमाना चाहते हैं** 'नकद फसल के लिए बढ़ता हुआ पागलपन' से तात्पर्य यह है कि लोग तुरंत व अधिक-से-अधिक लाभ कमाना चाहते हैं।

IV. *(ख)* **साहित्य को संसार को यथावत समझना चाहिए** गद्यांश की आरंभिक पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि पाठक साहित्य से आमतौर पर यह अपेक्षा रखते हैं कि साहित्य को संसार को यथावत समझना चाहिए।

V. *(क)* **लोगों को यथार्थ से अवगत करा बदलाव लाने के लिए** लेखक के अनुसार साहित्य लोगों को यथार्थ से अवगत करा बदलाव लाने के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करता है ताकि मनुष्य जागरूक बन सके।

6. I. *(ख)* **उन्हें तिरस्कृत हो जीवन जीना उचित नहीं लगा** गद्यांश के अनुसार कई पशुओं ने प्राण त्याग दिए, क्योंकि उन्हें तिरस्कृत होकर जीवन जीना उचित नहीं लगा। तिरस्कार से अच्छा ये जीवन समाप्त करना उचित मानते हैं।

II. *(ख)* **मनुष्यत्व में व्यक्तिगत इच्छा व निर्णय का तत्त्व समाप्त हो जाएगा** बंधन स्वीकार करने से मनुष्य पर यह प्रभाव पड़ेगा कि मनुष्य में व्यक्तिगत इच्छा वह निर्णय का तत्त्व समाप्त हो जाएगा। वह स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पाएगा।

III. *(क)* **स्वतंत्रता** गद्यांश के अनुसार मनुष्यत्व को परिभाषित करने हेतु 'स्वतंत्रता का मूल्य सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि स्वतंत्रता ही मनुष्य को वास्तव में मनुष्य बनाती हैं।

IV. (ग) **मानव के लिए बंधन आवश्यक नहीं है** गद्यांश के अनुसार यह उद्घोषणा की जा सकती है कि मानव के लिए बंधन आवश्य नहीं है बल्कि उसके लिए स्वतंत्रता आवश्यक है।

V. *(ग)* **बंधन स्वीकार करना** गद्यांश में नर और पशु की तुलना बंधन स्वीकार करने की बातों को लेकर की गई है। जिस नर तथा पशु को बंधन स्वीकार नहीं है, वे ही वास्तव में उच्च कोटि के नर व पशु हैं।

7. I. *(ग)* **लोभ के कारण** मनुष्य ने आदर्शों को मज़ाक का विषय लोभ के कारण बना दिया है। अपने लोभ के कारण मनुष्य अपने आदर्शों को ताक पर रख देता है।

II. *(ग)* **भले लोगों के लिए कानून नहीं चाहिए और बुरे लोग इसकी परवाह नहीं करते हैं** गद्यांश के अनुसार, धर्म एवं कानून के संदर्भ में भारत के विषय में कथन सबसे अधिक सही है कि भले लोगों के लिए कानून नहीं चाहिए और बुरे लोग इसकी परवाह नहीं करते हैं।

III. *(ख)* **जीवन में उन्नति के बड़े पैमाने के कारण कहीं छिप से गए हैं** भारतवर्ष में सेवा और सच्चाई के मूल्य जीवन को उन्नति के बड़े पैमाने के कारण कहीं छिप गए हैं।

IV. *(क)* **धर्म, कानून से बड़ी चीज़ है** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि भारतवर्ष का बड़ा वर्ग आज बाहर-भीतर कदाचित यह अनुभव कर रहा है कि धर्म, कानून से बड़ी चीज है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. *(क)* **उन्नति के संदर्भ में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'उन्नति के संदर्भ में जीवन मूल्यों की प्रांसगिता' होगा, क्योंकि गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि वर्तमान समय में उन्नति के लिए जीवन मूल्य बहुत आवश्यक हैं।

8. I. *(ख)* **दूसरों को खुशी देना** खुशी के खजाने को बढ़ाने जैसा दूसरों को खुशी देना है, क्योंकि जब हम दूसरों को खुशी देते हैं तो हमारी खुशियाँ भी बढ़ती हैं।

II. *(क)* **दुःख में भी खुशी को तलाशना** गद्यांश के अनुसार सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ है- दुःख में भी खुशी को तलाशना। यानी हर दुःख, कष्ट, परेशानी में कोई अच्छाई ढूँढ सकने की क्षमता का होना।

III. *(क)* **परेशानियों का सकारात्मक पक्ष देखना** गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि जैसे कोई चीज बाँटने से बढ़ती है वैसे ही खुशियों को बाँटना भी खुशी पाने का ही एक सोपान है।

IV. *(घ)* **उपरोक्त सभी** दौड़ में पिछड़ जाने का सकारात्मक पक्ष यह है कि हम और अधिक अभ्यास यानी पुनः अभ्यास करें, अपनी कमजोरियों को समझे तथा हार न माने।

V. *(ग)* **जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, क्योंकि गद्यांश में सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ बताकर उसके जीवन में अपनाने की सलाह दी गई है।

9. I. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश के अनुसार जो लोग जीवन के गतिरोध के लिए हालात को जिम्मेदार ठहराते हैं, जीवन को समझ नहीं पाते तथा आलसी व अकर्मण्य होते हैं, उन लोगों की नीयत और नीति में मेल नहीं रहता है।

II. *(ग)* **गलत नीयत या नीति के कारण** खोटी नीयत वाला व्यक्ति इस संसार में गलत नीयत या नीति के कारण नहीं टिक पाता है, क्योंकि जब उस तक उसकी नीयत सही नहीं होगी तब तक समाज में उसका कोई स्थान नहीं होगा।

III. *(ग)* **हालातों को** असफलताओं के लिए हालातों को जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं है, हालात तो उसके लिए भी वहीं होते हैं जो सफलता प्राप्त करते हैं।

IV. *(ख)* **नीयत को** लेखक ने नीति की जननी नीयत को कहा है। जब जननी (नीयत) में ही दोष होगा तो संतान (नीति) में कोई-न-कोई विकृति अवश्य आ जाएगी।

V. *(घ)* **विषम परिस्थितियों में** गद्यांश की अंतिम पंक्ति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जीवन का असली आनंद तब है जब परिस्थितियाँ विषम हों। विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की वास्तविक पहचान होती है।

10. I. *(क)* **निजता** 'प्राइवेसी' मूलतः अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है–निजता।

II. *(घ)* **आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना** उपरोक्त गद्यांश के अनुसार, आपस में मिल-जुलकर रहना, एक-दूसरे के दुःख-सुख में साथ देना और आपस में कुछ भी न छिपाना मुहल्लेदारी के लक्षण हैं।

III. *(क)* **अलगाव और अकेलापन** प्रस्तुत गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्राइवेसी के नाम पर हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए अर्थात् आज के व्यक्ति को प्राइवेसी के नाम पर अलगाव और अकेलापन ही मिला है।

IV. *(क)* **उपेक्षा करना** 'ताक पर रखना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है–उपेक्षा करना।

वाक्य-प्रयोग का उदाहरण–खिलाड़ियों ने अनुशासन का ध्यान न रखते हुए सारे नियमों को ताक पर रख दिया।

V. *(क)* **बदलते समय में संबंधों का ह्रास** प्रस्तुत गद्यांश का केंद्रीय विषय संबंधों में आए परिवर्तन को उजागर करना है। इसलिए बदलते समय में संबंधों का ह्रास ही इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है।

11. I. *(ख)* **जन्मजात वैभवशाली एवं सुविधासंपन्न व्यक्ति थे** नेहरू के विषय में देशवासियों की धारणा थी कि उन्होंने कभी धन का अभाव जाना ही नहीं। वह जन्मजात वैभवशाली एवं सुविधा-संपन्न व्यक्ति थे।

II. *(घ)* **वैभवपूर्ण जीवन** देश की आज़ादी के लिए नेहरू ने उस वैभवपूर्ण जीवन का भोग नहीं किया, जो उन्हें जन्मजात मिला था।

II. *(घ)* **नौ वर्ष तक जेल में रहकर अमर** कृतियों की रचना विभिन्न व्यक्तिगत और देशव्यापी समस्याओं से जूझते हुए भी उनका अमूल्य योगदान साहित्य के क्षेत्र में था। उन्होंने जेल की नौ वर्ष की यातना-भरी अवधि में ही विश्व साहित्य की अमर कृतियों की रचना की।

IV. *(ग)* **मिश्र** प्रस्तुत वाक्य मिश्र वाक्य है, क्योंकि प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य को 'किंतु' व्याधिकरण समुच्चयबोधक से जोड़ा गया है।

V. *(ग)* **देश की आजादी में नेहरू का योगदान** प्रस्तुत गद्यांश के केंद्र में नेहरू जी के विषय में देश की आज़ादी में उनकी भूमिका के विषय में बताया गया है।

12. I. (घ) **ये सभी** गद्यांश के अनुसार भूमि निम्नीकरण के कई कारण हैं, जिनमें खनन, अति पशुचारण, तनों की कटाई, अधिक सिंचाई आदि शामिल हैं। अतः विकल्प (घ) सही उत्तर है।

II. *(क)* **सीमेंट उद्योग में अधिक धूल विसर्जन की परत जम जाने के कारण** गद्यांश में बताया गया है कि मृदा के जल सोखने की प्रक्रिया सीमेंट उद्योग में अधिक धूल विसर्जन की परत जम जाने के कारण अवरुद्ध होती है।

III. *(ख)* **वनारोपण व चरागाहों का उचित प्रबंधन** भूमि निम्नीकरण से बचने के लिए वनारोपण व चरागाहों का उचित प्रबंधन कुछ हद तक मदद कर सकता है। पेड़ों की रक्षक मेखला, पशुचारण नियंत्रण और रेतीले टीलों को काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर स्थिर बनाने की प्रक्रिया से भूमि पर कटाव की रोकथाम की जा सकती है।

IV. *(क)* **झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा** खनन के कारण झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उड़ीसा जैसे राज्यों में वनोन्मूलन भूमि निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. *(घ)* **भूमि निम्नीकरण की समस्या** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक 'भूमि निम्नीकरण की समस्या' है, क्योंकि यहाँ भूमि निम्नीकरण के कारण तथा उसके उत्तरदायी कारण का वर्णन कर उसे एक समस्या के रूप में व्यक्त किया गया है।

13. I. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** गद्यांश के अनुसार महापुरुष प्रायः मध्यवर्ग के घरों या गरीब परिवार में जन्म लेते हैं। ऐसे व्यक्ति संपन्न परिवार में बहुत कम पैदा होते हैं।

II. *(घ)* **ये सभी** विनय, साहस, उदारता, कष्ट सहिष्णुता, साहस आदि गुण मनुष्य को अहंकारहीन बनाते हैं। इन गुणों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर पड़ता है।

III. *(ग)* **कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य न छोड़ना** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जीवन को सरल और सादा बनाने के लिए हमें कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए व अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम रखना चाहिए।

IV. *(ग)* **उसके विचारों और करनी से** गद्यांश के अनुसार सच्चे व्यक्ति की पहचान उसके विचारों और करनी से होती है। इसलिए हमें सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च रखना चाहिए।

V. *(क)* **सादा जीवन उच्च विचार** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उचित शीर्षक 'सादा जीवन उच्च विचार' हो सकता है, क्योंकि यहाँ सरल जीवन-शैली अपनाने तथा विचार की उच्चता पर बल दिया गया है।

14. I. *(ख)* **टिमटिमाते तारों के** गद्यांश में आकाश की काली पृष्ठभूमि पर हजारों टिमटिमाते तारों के चिपके होने की बात की गई है अर्थात् रात के समय आकाश में असंख्य तारे चमकते हुए दिखाई देते हैं।

II. *(ग)* **गुरुत्वाकर्षण शक्ति** इस गद्यांश में गुरुत्वाकर्षण शक्ति के वैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख किया गया है। इस शक्ति के कारण तारे अपने स्थान पर स्थिर बने रहते हैं।

III. *(ख)* **क्योंकि वे हमसे दूर हैं** हम तारों को चलते हुए इसलिए नहीं देख सकते हैं, क्योंकि वे हमसे बहुत दूर हैं। वास्तव में, तारे अपने पथ पर धीरे-धीरे चलते रहते हैं, परंतु दूरी के कारण वे हमें चलते हुए दिखाई नहीं देते हैं।

IV. *(ख)* **सूर्य के** गद्यांश के अनुसार पृथ्वी एवं अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। वे सूर्य के चारों ओर अपने-अपने पथ पर चलते रहते हैं।

V. *(क)* **आकाश के वैज्ञानिक तथ्य** प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक 'आकाश के वैज्ञानिक तथ्य' हो सकता है, क्योंकि गद्यांश में आकाश से जुड़े वैज्ञानिक तथ्यों का वर्णन किया गया है।

15. I. *(घ)* **(ख) और (ग) दोनों** गद्यांश के अनुसार, व्यक्ति को सुमतिसंपन्न बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका उसकी शिक्षा एवं समाजीकरण निभाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कुशल बुद्धि के निर्माण में शिक्षा और समाजीकरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

II. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश में बताया गया है कि शिक्षा व्यक्ति में चारित्रिक गुणों का विकास करके, समाज के अन्य व्यक्तियों के प्रति सद्भावना विकसित करके तथा समाज के प्रति आदर सम्मान की भावना विकसित करके समाज एवं राष्ट्र (देश) की प्रगति में सहयोग करती है।

III. *(ग)* **शिक्षा के** गद्यांश के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति को विनम्रता एवं शालीनता का पाठ पढ़ाती है और उसे स्वावलंबी बनाती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम से मनुष्य स्वावलंबी बनता है।

IV. *(ग)* **जब उसमें सद्विवेक उत्पन्न होता है** गद्यांश में स्पष्टतः बताया गया है कि जब मनुष्य में सद्विवेक उत्पन्न होगा तब वह एक-दूसरे से ईर्ष्या एवं द्वेष करना छोड़ देगा। जातीयता, सांप्रदायिकता, प्रांतीयता की संकीर्ण मान्यताओं को अस्वीकार कर सकेगा।

V. *(ग)* **बौद्धिकतापूर्ण मानवता की पुनर्स्थापना** गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक बौद्धिकतापूर्ण मानवता की पुनर्स्थापना होगा, क्योंकि इसमें इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि विवेकपूर्ण मानव को दोबारा स्थापित किया जाए।

16. I. (क) **हिंदी के माध्यम से अपनी पहचान बनाना** गद्यांश की आरंभिक पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है कि सिनेमा जगत के अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों और निर्देशकों को हिंदी के माध्यम से पहचान मिली। इसी कारण गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी की ओर आए।

II. *(ग)* **हिंदी साधारण भारतीय की जीवन-शैली बन गई** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि टी.वी. ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न हिंदी धारावाहिकों ने आम जनता के घरों में अपना मुकाम हासिल किया, जिससे हिंदी साधारण भारतीय की जीवन-शैली बन गई।

III. *(ग)* **सदी के महानायक की** गद्यांश के अनुसार, सदी के महानायक अभिताभ बच्चन की हिंदी ने दर्शक वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया। इस कारण हिंदी हर दिल की धड़कन और धड़कन की भाषा बन गई।

IV. *(ख)* **हिंदी भाषा की गुणवत्ता एवं उपयोगिता** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'हिंदी भाषा की गुणवत्ता एवं उपयोगिता' होगा, क्योंकि इसमें हिंदी भाषा के गुणों; जैसे-सरल, सहजता, प्रवाहमय तथा उसके उपयोग पर बल दिया गया है।

V. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश से स्पष्ट होता है कि गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों द्वारा हिंदी को अपनाना, गैर-हिंदी राज्यों के कलाकारों द्वारा हिंदी को अपनी पहचान के रूप में चुनना तथा डिस्कवरी चैनल का हिंदी में अनुवाद होना, ये सभी हिंदी की संप्रेषणीयता के प्रमाण हैं।

17. I. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश के अनुसार, देश के हित के लिए संपर्क भाषा आवश्यक है, क्योंकि यह देश की एकता व अखंडता को बनाए रखती है, एक-दूसरे को समझने में सहायक है तथा अपने विचार प्रकट करने का माध्यम है। इस प्रकार सभी विकल्प सही हैं।

II. *(ग)* **पारस्परिक संबंधों के गतिरोध की समाप्ति** गद्यांश में स्पष्टतः कहा गया है कि यदि राष्ट्र की एक संपर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक संबंधों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

III. *(घ)* **भाषा** गद्यांश के अनुसार, भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य एक-दूसरे के निकट जा सकते हैं एवं उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मनुष्य को परस्पर जोड़ने का कार्य भाषा करती है।

IV. *(ख)* **भाषा बहता नीर कहकर** गद्यांश में स्पष्टतः कहा गया है कि कबीर ने भाषा को बहता नीर कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी, लेकिन उनका लक्ष्य शब्दरूपी भाषा के महत्त्व को नकारना नहीं था।

V. *(ग)* **भाषा की उपयोगिता** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'भाषा की उपयोगिता' होगा, क्योंकि इसमें भाषा के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए उसका महत्त्व स्वीकार किया गया है।

18. I. *(ख)* **अहंकार का प्रदर्शन** गद्यांश की आरंभिक पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि फिजूलखर्ची को सूक्ष्म दृष्टि से अहंकार का प्रदर्शन करना कहा गया है।

II. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अहंकारी लोग बाहर से भले ही गंभीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन से भरे होते हैं, वे सतही मानसिकता रखते हैं और किसी भी प्रकार से अपने अहं का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इस प्रकार, सभी विकल्प सही हैं।

III. *(ख)* **समुद्र तट की लहरों से** लेखक ने मानव मन में उद्वेलित होने वाली भावनाओं की तुलना समुद्र तट की लहरों से की है। जिस प्रकार समुद्र की लहरें आते-जाते समय चट्टानों के पत्थरों को भिगोकर चली जाती हैं, उसी प्रकार हमारे भीतर आवेगों की लहरें भी हमें टक्कर देती रहती हैं।

IV. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** जीसस के अनुसार, मनुष्य को भीतर से अंतिम यानी विनम्र और निरहंकारी होना चाहिए।

V. *(क)* **अहंकार : एक बड़ा अवगुण** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'अहंकार : एक बड़ा अवगुण' होगा, क्योंकि यहाँ अहंकार के कारण होने वाली हानि पर प्रकाश डालते हुए उसे मनुष्य के लिए अनुपयुक्त माना है।

19. I. *(ख)* **शिक्षा का महत्त्व** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'शिक्षा का महत्त्व' होगा, क्योंकि इसमें शिक्षा की उपयोगिता एवं उसके महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

II. *(ख)* **विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के अध्ययन से** गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि की विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को पढ़कर विद्यार्थी विद्वान ही नहीं बनता, बल्कि उसमें एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि का निर्माण भी होता है।

III. *(ग)* **व्यावसायिक शिक्षा को** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण माना जाता है, क्योंकि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं।

IV. *(क)* **व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को सामान्य विषयों की जानकारी न होना** गद्यांश के अनुसार, व्यावसायिक शिक्षा का दुष्परिणाम इस रूप में सामने आता है कि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को सामान्य विषयों की जानकारी भी नहीं होती है। वे केवल रोजगार प्रदान करने वाली शिक्षा पर ही ध्यान देते हैं।

V. *(ख)* **शिक्षा मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है** 'शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है' पंक्ति का आशय यह है कि शिक्षा मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है।

20. I. *(क)* **जलवायु परिवर्तन की समस्या** प्रस्तुत गद्यांश में जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। अतः इसका सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'जलवायु परिवर्तन की समस्या' होगा।

II. *(ग)* **हिमनदों के पिघलने को** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि हिमनदों का पिघलना जलवायु परिवर्तन का सबसे संवेदनशील सूचक माना जाता है।

III. *(ख)* **वैश्विक तापवृद्धि की** गद्यांश के अनुसार वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का होना अच्छा है, किंतु जब इनकी मात्रा बढ़ जाती है, तो तापमान में वृद्धि होने लगती है, जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग अर्थात् वैश्विक तापमान की समस्या उत्पन्न होती है।

IV. *(ग)* **हिमनदों के स्तर का नीचे खिसकना** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पृथ्वी पर हिमनदों के लगातार कम होने तथा उनके स्तर के नीचे खिसकने से समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि हुई है।

V. *(ख)* **तापक्रम अनुकूल बना रहता है** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि सौर ऊर्जा की कुछ मात्रा ग्रीन हाउस गैसों द्वारा अवशोषित होकर पुनः पृथ्वी पर पहुँच जाती है, जिससे तापक्रम अनुकूल बना रहता है।

21 I. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** समाज-कल्याण का उद्देश्य ऐसे व्यक्ति की सहायता करना है, जो असमर्थता की भावना से दुःखी होने पर भी अपने जीवन का सर्वोत्तम सदुपयोग करना चाहता है अथवा उन कठिनाइयों पर विजयी होना चाहता है, जो उसे पराजित कर चुकी हैं।

II. *(क)* **दुर्बल व्यक्ति की** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि समाज-कल्याण की भावना समाज के सबसे दुर्बल व्यक्ति की सहायता करती है।

III. *(ग)* **सभी विकलांग व्यक्तियों के लिए** "उनका आत्मविश्वास जाग सके तथा उनके सामाजिक संपर्क मजबूत बन सकें" वाक्य में 'उनका' शब्द सभी विकलांग व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

IV. *(घ)* **उपरोक्त सभी** स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपने परिपत्र में समाज-कल्याण के लिए अपना लक्ष्य निर्धारित किया है कि सभी विकलांग व्यक्तियों को, चाहे उनकी अक्षमता कुछ भी हो, सामुदायिक जीवन में हाथ बँटाने तथा उसके विकास में योगदान देने के लिए अधिक-से-अधिक अवसर दिए जाएँगे, ताकि उनकी क्षमताओं का पूर्ण क्रियान्वयन हो सके, उनका आत्मविश्वास जाग सके तथा उनके सामाजिक संपर्क मजबूत बन सकें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

V. *(क)* **व्यक्तिगत सेवा से** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि समाज-कल्याण का तात्पर्य व्यक्तिगत सेवा से है और व्यक्तिगत सेवा भी ऐसी, जो विशेष प्रकार की न होकर सामान्य प्रकार की होती है।

22. I. *(ग)* **इससे मानवीय दृष्टि में व्यापकता और विचारों में उदारता आती है** विदेशी भाषा के माध्यम से हमारी संवेदना व्यापक होती है, हमारे ज्ञान का विस्तार होता है, हमारी मानवीय दृष्टि में व्यापकता आती है और विचारों में उदारता का समावेश होता है, इसलिए गद्यांश में कहा गया है कि 'विदेशी भाषा का अध्ययन बुरी बात नहीं है।'

II. *(क)* **जब मनुष्य को अपनी भाषा और साहित्य का ज्ञान हो** मातृभाषा का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। संपूर्ण समाज इसी के माध्यम से स्वयं को व्यक्त करता है। अतः जब मनुष्य को अपनी भाषा और साहित्य का ज्ञान होगा, तभी वह स्वावलंबी बन सकता है।

III. *(ख)* **मातृभाषा के लिए** प्रस्तुत पंक्ति में 'उसका' शब्द मातृभाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

IV. *(घ)* **उपरोक्त सभी** प्रत्येक भाषा का अपना एक विशिष्ट साहित्य होता है। मातृभाषा में हम अपने भावों और विचारों को कुशलता से व्यक्त कर सकते हैं, हमारा हृदय अपनी भाषा में बोलता है तथा राष्ट्र हृदय उसमें धड़कता है, इसलिए विदेशी भाषा की अपेक्षा मातृभाषा का महत्त्व अधिक है।

V. *(ख)* **मातृभाषा का महत्त्व** मातृभाषा स्वयं में एक परिचायिका होती है, जोकि देशवासियों को देश की संस्कृति, अनुशासन व ज्ञान का बोध कराती है। प्रस्तुत गद्यांश में मातृभाषा के महत्त्व पर ही प्रकाश डाला गया है। अतः गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक मातृभाषा का महत्त्व ही होगा।

23. I. *(ख)* **मनुष्य के भावों के विशेष प्रकार के संगठन पर** प्रस्तुत गद्यांश की आरंभिक पंक्ति में स्पष्ट किया गया है कि लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा मनुष्य के भावों के विशेष प्रकार के संगठन पर आधारित है।

II. *(ख)* **अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा के लिए** गद्यांश के अनुसार धर्म-प्रवर्तकों ने स्वर्ग-नरक का भय इसलिए दिखाया है, जिससे वह अपने स्वरूप वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा को बनाए रख सकें। साथ ही उनके स्वार्थों की पूर्ति भी होते रहे।

III. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि शासन व्यवस्था कई कारणों से भय और लालच का सहारा लेती है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—अन्याय और अत्याचार के विरोध को रोकने के लिए, द्वेष और संकुचित विचारों के प्रचार को बनाए रखने के लिए तथा उनके द्वारा किए गए अत्याचार के विरुद्ध आवाज न उठाने के लिए।

IV. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी जाति विशेष को मूर्ति पूजा करते देखना तथा भस्म या रुद्राक्ष धारण करना अन्य जातियों के प्रवर्तकों के लिए अनिष्ट कार्य है।

V. *(क)* **शासन व्यवस्था और समाज** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'शासन व्यवस्था और समाज' होगा, क्योंकि गद्यांश में समाज और शासन व्यवस्था पर चर्चा करते हुए बताया गया है कि शासन व्यवस्था अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए समाज में भय और लालच की भावना को बढ़ावा देती है।

24. I. *(ख)* **राखीगढ़ी** हरियाणा के पुरातत्त्व विभाग द्वारा किए गए शोध तथा खुदाई के अनुसार लगभग ५५०० हेक्टेयर में फैली ईसा से लगभग ३३०० वर्ष मौजूद राखीगढ़ी के सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर होने की संभावना है।

II. *(ग)* **शहर नियोजित था** गद्यांश के अनुसार राखीगढ़ी में चौड़ी सड़कों के पाए जाने से स्पष्ट होता है कि यह शहर नियोजित था। इसकी सड़कों की चौडाई १.९२ मीटर थी।

III. *(क)* **नष्ट हो जाने का खतरा है** मई, २०१२ में राखीगढ़ी को 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने एशिया के विरासत स्थलों में शामिल किया है, क्योंकि इसके नष्ट हो जाने का खतरा है।

IV. *(ख)* **इसका समुचित अध्ययन शेष है** पुरातत्त्व विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रुचि ले रहे हैं, क्योंकि इसके बारे में समुचित अध्ययन शेष है। यहाँ से प्राप्त अवशेष हड़प्पा और मोहनजोदड़ो सभ्यता से भी पुरातन हैं।

V. *(घ)* **एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी** प्रस्तुत गद्यांश में हरियाणा के हिसार जिले में खुदाई में मिले राखीगढ़ी शहर पर प्रकाश डाला गया है, इसलिए इसका उपयुक्त शीर्षक 'एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी' होगा।

25. I. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** मनुष्य का दूसरों की संपन्नता, ऊँचा पद आदि देखकर विचलित हो जाना और यह सोचना कि यह सब उसके पास क्यों नहीं है, यही विचार उसकी वैचारिक गरीबी को प्रकट करते हैं।

II. *(ख)* **जीवन में असफल होते हैं** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विचारों की गरीबी के परिणामस्वरूप जीवन में सहजता का भाव न होने से अधिकतर लोग जीवन में हमेशा ही असफल होते हैं।

III. *(घ)* **ये सभी** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि सहज भावों को धारण करने के लिए हमें नियमित रूप से योगासन-प्राणायाम और ध्यान करने के साथ-साथ ईश्वर का स्मरण भी करना चाहिए।

IV. *(ग)* **अंदर बैठे विकारों से** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मनुष्य के भीतर व्याप्त ईर्ष्या-द्वेष और परनिंदा जैसे विकार ही उसके अंदर असहजता का भाव उत्पन्न करके उसके जीवन के हर पल को असहज बनाते हैं।

V. *(ख)* **असहजता से** गद्यांश के अनुसार, यदि हम अध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रखें, तो जीवन में हर पल उत्पन्न होने वाली असहजता से बच सकते हैं।

26. I. *(ग)* **वे विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देश, जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं** पर्यावरण नैतिकता से अभिप्राय है वे विषय, सिद्धांत और दिशा-निर्देश, जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

II. *(क)* **मनुष्य** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मानव केंद्रित विचारधारा के अनुसार, प्रकृति का स्वामी मनुष्य है और वह जैसे चाहे वैसे प्रकृति का प्रयोग कर सकता है।

III. *(ख)* **पृथ्वी और प्रकृति केंद्रित** गद्यांश में बताया गया है कि पृथ्वी और प्रकृति केंद्रित विचारधारा के अनुसार, पृथ्वी हमारी जननी है। हमें इसका आदर करना चाहिए।

IV. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** प्रस्तुत गद्यांश में विकास आधारित प्रौद्योगिकी के कारण प्रकृति के दोहन/शोषण पर विचार व्यक्त किए गए हैं। इसके साथ ही यह भी बताने का प्रयास किया गया है कि पर्यावरण के अपघटन को रोकने से एक स्वच्छ व स्वस्थ पर्यावरण और बेहतर भविष्य की नींव रखी जा सकती है।

V. *(घ)* **उपरोक्त सभी** प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार पर्यावरण के अपघटन के लिए साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद तथा आधिपत्य के लिए संघर्ष आदि सभी कारण जिम्मेदार हैं।

27. I. *(ख)* **बालश्रम : समस्या और समाधान** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'बालश्रम : समस्या और समाधान' होगा, क्योंकि गद्यांश में बालश्रम की समस्या का उल्लेख करते हुए उसका समाधान प्रस्तुत किया गया है।

II. *(ग)* **बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना** राजेश जोशी की कविता का मूल आशय बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना है। वह कैसा समाज है, जो अपने बच्चों के लिए पुस्तकालय, खेल का मैदान, पाठशाला उपलब्ध नहीं करा पा रहा है।

III. *(घ)* **उम्र का निर्धारण करने को** गद्यांश में बताया गया है कि कैलाश सत्यार्थी के अनुसार बाल श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।

IV. *(क)* **लोग जानने लगे कि १४ वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि 'बचपन बचाओ आंदोलन' का समाज पर यह सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि अधिकांश लोग इस तथ्य से अवगत हो गए कि १४ वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है।

V. *(क)* **कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही द्वारा** गद्यांश में कहा गया है कि बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इसके विरुद्ध कठोर नियम व कानून बनाए तथा जो इन नियमों की अवहेलना या उल्लंघन करे, उनके प्रति कठोर कार्यवाही की जाए।

28. I. *(क)* **कर्त्तव्यपालन** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि लोकतंत्र का मूल तत्त्व कर्त्तव्यपालन है, जबकि लोग समझते हैं कि उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जिम्मेदारी सरकार की है।

II. *(ख)* **देश की विशाल मानव शक्ति को** गद्यांश में बताया गया है कि देश की विशाल मानव शक्ति अभी सोई पड़ी है। अतः उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करने की आवश्यकता है।

III. *(घ)* **उपरोक्त सभी** गद्यांश में सरकार द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों का उल्लेख किया गया है; जैसे—सरकार ने वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खुलवाई, देश में विशाल बाँध बनवाए तथा विभिन्न कारखाने खुलवाए आदि।

IV. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** गद्यांश में लेखक नागरिकों को यह सुझाव देता है कि लोग अपनी समझ व आंतरिक ऊर्जा को आधार बनाकर खड़े हों और उनके समक्ष जो भी साधन उपलब्ध हों उनके आधार पर ही उन्हें कार्य आरंभ करना चाहिए।

V. *(क)* **सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करना** गद्यांश में लेखक ने सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करने की समस्या को उजागर किया है।

29. I. *(क)* **शिक्षा** गद्यांश में उल्लेख है कि शिक्षा किसी भी देश की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा से व्यक्ति शक्ति को ग्रहण कर सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखता है।

II. *(क)* **अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर** शिक्षा मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाती है।

III. *(ख)* **अनुकरण की आदत को** पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में अनुकरण की आदत को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण वह अपनी शिक्षा पद्धति व संस्कृति को दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं।

IV. *(ग)* **नीतियों से परिपूर्ण** प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी। नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने के सबसे बड़े माध्यम होते हैं।

V. *(ग)* **(क) और (ख) दोनों** प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भारतीय व पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विषय में चर्चा की है। साथ ही पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के भारतीय शिक्षा पद्धति पर पड़ने वाले प्रभाव को भी स्पष्ट किया गया है।

30. I. *(क)* **नेपाल में आया भूकंप याद आ गया** गद्यांश में कहा गया है कि लेखक को पच्चीस अप्रैल को नेपाल में आया भूकंप याद आ गया था। धरती के उस कंपन को याद कर आज काठमांडू पर लिखते हुए लेखक की अँगुलियाँ काँप रही थीं।

II. *(ख)* **न्यूज चैनल जब धरहरा स्तंभ दिखा रहे थे** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि काठमांडू में आए भूकंप के दौरान न्यूज चैनल जब धरहरा स्तंभ को भरभराकर गिरते दिखा रहे थे तब मेरा (लेखक) मन बैठा जा रहा था।

III. *(क)* **भूकंप में वे नहीं बचे होंगे** लेखक यह जानता है कि उस भयावह भूकंप में कुछ भी शेष नहीं रह गया। फिर भी फेरी लगाकर सामान बेचने वाले तथा वह बाँसुरी वादक जिसके सुरों ने मन को मोह लिया था, इनके लिए लेखक दु:खी हैं।

IV. *(क)* **पुरुष रोज़गार के लिए बाहर जाकर काम करते हैं** गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पहाड़ों पर पर्याप्त ज़मीन नहीं होती और रोज़गार के साधन भी बहुत नहीं होते, इसलिए घर के पुरुष मैदानी इलाकों में कमाने जाते हैं और घर-परिवार की सारी ज़िम्मेदारी महिलाएँ उठाती हैं।

V. *(ख)* **पर्यटन और नेपाल** प्रस्तुत गद्यांश में नेपाल और वहाँ की स्थिति व वहाँ के सौंदर्य को रेखांकित किया गया है। अतः इसलिए सर्वाधिक उचित शीर्षक 'पर्यटन और नेपाल' ही होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in